फरवरी 2024

दादावाणी

Retail Price ₹ 20

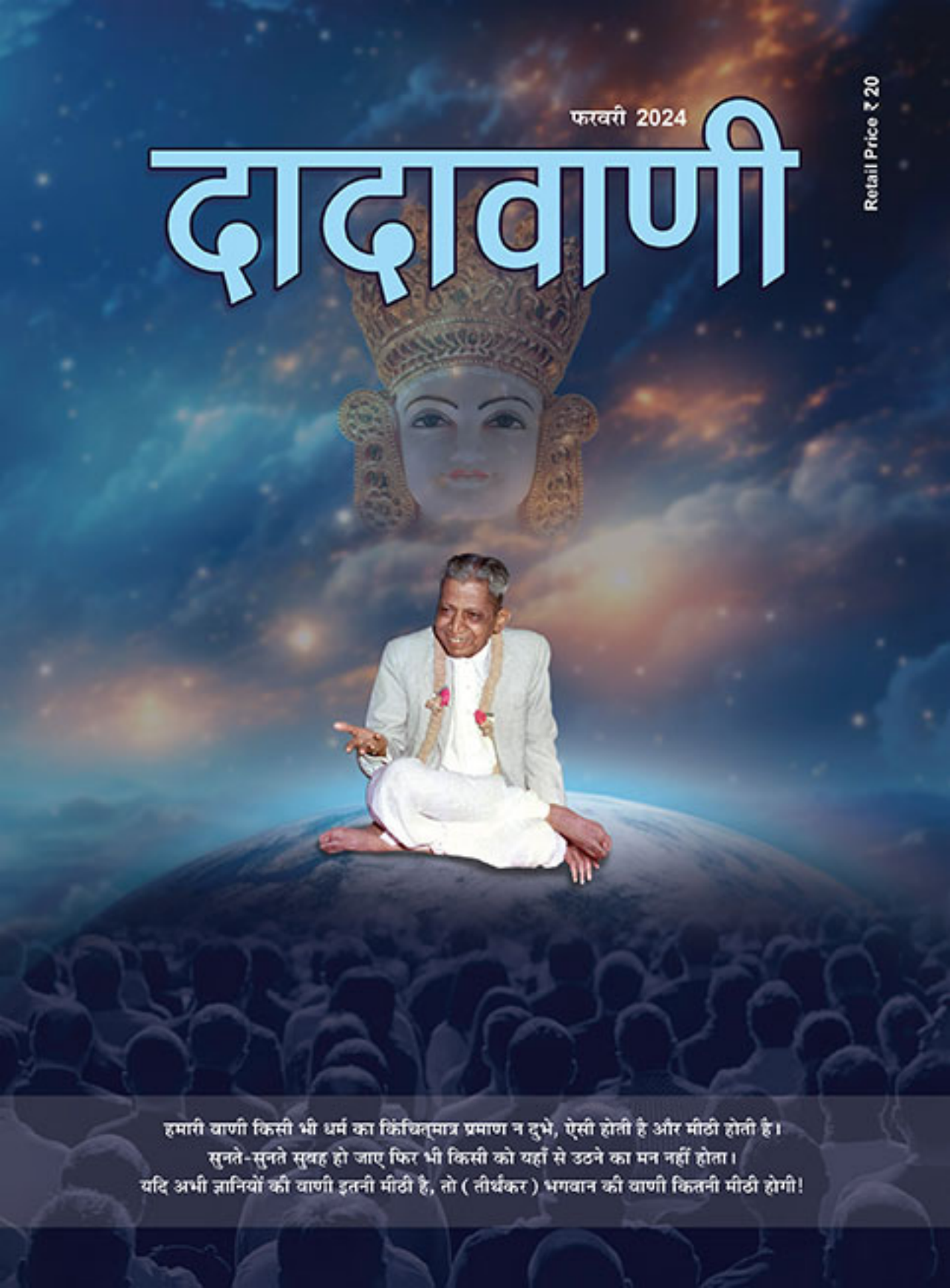

हमारी वाणी किसी भी धर्म का किंचित्मात्र प्रमाण न दुभे, ऐसी होती है और मीठी होती है।
सुनते-सुनते सुबह हो जाए फिर भी किसी को यहाँ से उठने का मन नहीं होता।
यदि अभी ज्ञानियों की वाणी इतनी मीठी है, तो (तीर्थंकर) भगवान की वाणी कितनी मीठी होगी!

वेरावल : त्रिमंदिर का खात मुहूर्त : ता. 28 नवम्बर 2023

अडालज : पूज्य नीरु माँ का 80 वाँ जन्मदिन : ता. 2 दिसम्बर 2023

पाटण : सत्संग-ज्ञानविधि : ता. 9-10 दिसम्बर 2023

वर्ष : 19 अंक : 4
अखंड क्रमांक : 220
फरवरी 2024
पृष्ठ - 28

Editor : Dimple Mehta
© 2024
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Multiprint
Opp. H B Kapadiya New High School, At-Chhatral, Tal: Kalol, Dist. Gandhinagar - 382729

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
5 साल
भारत : 1000 रुपये
वार्षिक
भारत : 200 रुपये
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

ज्ञानी सिखाते हैं 'स्याद्वाद वाणी' के सोपान

संपादकीय

जगत् कल्याण के परम निमित्त अक्रम विज्ञानी परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) द्वारा अत्यंत करुणा से निकली अनुपम ज्ञानवाणी इस काल का एक अद्भुत आश्चर्य सर्जित हुआ है। संपूर्ण रूप से सामने वाले का आत्मकल्याण कैसे हो, उसी उद्देश्य से निकली हुई वाणी, वह वीतराग वाणी है! यह वीतराग वाणी ही सिर्फ मोक्ष में ले जाने वाली है।

दादाश्री हमेशा कहते थे, कि हमारे पास यह तीर्थंकरों का माल है, हमारा खुद का नहीं है। तीर्थंकर भगवान, वे केवलज्ञान सहित होते हैं। उनकी देशना अलग प्रकार की होती है, संपूर्ण स्याद्वाद वाणी ही होती है। तीर्थंकर भगवान के परमाणु, उनकी वाणी के परमाणु! ओहोहो! उस स्याद्वाद वाणी को सुनते ही सभी के हृदय तृप्त हो जाते हैं। तीर्थंकर बोलते हैं वहाँ पर संपूर्ण स्याद्वाद पूर्ण ही होता है। तीर्थंकरों की स्याद्वाद वाणी 360 डिग्री की थी और हमारी स्याद्वाद वाणी 356 डिग्री की है, इसलिए यह पूर्ण नहीं कहलाती। हमारी वाणी में कम-ज़्यादा निकल सकता है, बदलाव वाला हो सकता है। क्योंकि यह पूर्वजन्म में रिकॉर्ड हो चूकी है।

दादाश्री बहुत ही ईमानदारी से अपनी कमी को स्वीकार करते हैं कि हमसे अभी भी, कभी-कभार साधु-महाराज के लिए करुणा भाव से कड़क वाणी निकल जाती है कि, भगवान की बात कहाँ और आप लोगों को कहाँ ले जा रहे हो! वास्तव में ऐसा नहीं होना चाहिए। लेकिन पूर्व में चार्ज किया हुआ आज डिस्चार्ज में निकल रहा है, उस पर खुद पूर्ण जाग्रत है और प्रतिक्रमण भी करते हुए, कहते हैं कि यह हमारी कमी है।

ज्ञानी की वाणी जीवंत, साक्षात् सरस्वती रूप, निर्अहंकारी, राग-द्वेष रहित, निर्ममत्व वाली, निराग्रही, निष्पक्षपाती, स्याद्वाद, अनेकांत वाली, वचनबल सहित, कड़क किन्तु प्रेममय और करुणा से भरी होती है। सामने वाले के व्यवहार के अधीन उनकी वाणी अनेक जीवों को कल्याण के मार्ग पर ले जाने वाली होती है! ऐसी संपूर्ण स्याद्वाद् वाणी कब उत्पन्न होती है? अहंकार संपूर्ण खत्म हो जाता है, जगत् में कोई दोषित ही नहीं दिखाई देता, जब सभी कषाय खत्म हो जाते हैं, तब स्याद्वाद वाणी निकलती है। आत्मा का स्पष्ट अनुभव हुआ हो तो ही स्याद्वाद वाणी निकलती है, बाकी तब तक वह बुद्धि से है ऐसा माना जाता है। स्याद्वाद वाणी नहीं निकलती, तब तक मोक्षमार्ग में उपदेश देना भयंकर जोखिम है।

तीर्थंकर भगवान का चारित्र, उन्हें बरतती दशा का अनुभव प्रमाण, ज्ञानी पुरुष दादा भगवान को बरतने वाली दशा पर से मिल सकता है। जैसे-जैसे ज्ञानी पुरुष का वीतराग चारित्र देखेंगे, उनकी वाणी को समझते जाएँगे, वैसे-वैसे वीतराग चारित्र के कारणों का सेवन होगा। प्रस्तुत संकलन, हमें ज्ञानी पुरुष की वीतराग स्याद्वाद वाणी की यथार्थ समझ दें, यही अभ्यर्थना।

- जय सच्चिदानंद

ज्ञानी सिखाते हैं 'स्याद्वाद वाणी' के सोपान

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

वाणी से चारित्रबल की पहचान

'चारित्रबलनी ओळख, संचारे नीकळेली वाचा।'
('चारित्रबल की पहचान, समता से निकली हुई वाणी')

– नवनीत

'चारित्रबल क्या है' उसकी पहचान किससे होती है? और कुछ नहीं देखना है। भगवे कपड़े पहनते हैं या सफेद कपड़े पहनते हैं, वह नहीं देखना है। भाषा कैसी निकलती है, उस पर से चारित्रबल की पहचान होती है।

वाणी भी कुछ ऐसी-वैसी नहीं। संचार से निकली हुई यानी कि समता भाव से निकली हुई वाणी। संचार अर्थात् चर पर से चार है। वाइब्रेशन उत्पन्न होना, वह संचार। शब्दों से वाइब्रेशन उत्पन्न होते हैं। फिर 'चर' पर से 'विचरती' होता है। उस पर से 'विचार' होता है। और उससे वाणी उत्पन्न होती है।

'वाणी क्या निकलती है' उस पर से चारित्रबल की पहचान होती है। वाणी के तो अनेक प्रकार हैं। कड़वी, मीठी, खट्टी, आघात करने वाली, प्रत्याघात करने वाली, उपघात करने वाली, ऐसी तरह-तरह की वाणी हैं। संसार में जो वाणी निकलती है, उसे चारित्रबल की पहचान कहा जाता है।

आत्मा सचराचर है। सचर में तीन चर हैं। आचार, विचार और उच्चार। ये तीन यदि नोर्मेलिटी में हों तो हर्ज नहीं है। ये तीन नोर्मेलिटी में हों तो मनुष्य की सुगंध आती ही है। मनुष्य की सबसे बड़ी परीक्षा कौन सी है? उसके आचार पर से परीक्षा मत करना, उसके विचार पर से परीक्षा मत करना, उसकी वाणी पर से परीक्षा करना!

बुद्धि स्याद्वाद - ज्ञान स्याद्वाद

दो प्रकार के स्याद्वाद हैं : एक है बुद्धि स्याद्वाद और दूसरा है ज्ञान स्याद्वाद। यदि ज्ञान स्याद्वाद हो तो उनका चारित्र, वह वीतराग चारित्र है। और बुद्धि स्याद्वाद जो होता है, वह संपूर्ण स्याद्वाद नहीं होता, परंतु स्याद्वाद जैसे लक्षण लगते हैं हमें। अभी कितने ही आचार्य ऐसे हैं कि जो बुद्धि स्याद्वाद जैसी वाणी बोलते हैं। परंतु वह स्याद्वाद सभी जगह टिकता नहीं है जबकि ज्ञान स्याद्वाद सभी जगह टिकता है। फिर वह मुस्लिम धर्म का हो या किसी भी धर्म का हो, परंतु ज्ञान स्याद्वाद सभी जगह टिकता है। और बुद्धि स्याद्वाद तो पक्ष तक ही सीमित होता है। दूसरे पक्ष की बात करें, वहाँ वे स्याद्वाद बोलते तो हैं लेकिन वर्तन में नहीं आता। यानी कि वाणी आग्रह वाली होती है।

एक महाराज के साथ मैंने बातचीत की थी। मेरे अभिप्राय के प्रमाण ही नहीं दुभते थे, उसे स्याद्वाद कहते हैं। वह एक प्रकार का स्याद्वाद है, परंतु वह व्यवहारिक स्याद्वाद कहलाता है लेकिन वह भगवान का स्याद्वाद तो नहीं है।

प्रश्नकर्ता : व्यवहारिक स्याद्वाद यानी?

दादाश्री : व्यवहार की बातों में बहुत अच्छी तरह से आपको फिट हो जाए, ऐसे सब समझा देते हैं। आपके मत को तोड़े नहीं, इस तरह से।

प्रश्नकर्ता : ऐसे बहुत कम होते हैं।

दादाश्री : लेकिन हैं ऐसे। उसे वे लोग स्याद्वाद मानते हैं। परंतु मैं तो उसे स्याद्वाद एक्सेप्ट नहीं करता न! समकित हुए बगैर इसे स्याद्वाद नहीं कह सकते। सांसारिक मीठी वाणी स्लिप करवाती है और स्याद्वाद मधुर वाणी ऊर्ध्वगामी बनाती है!

इस स्याद्वाद का एक अंश भी जगत् ने सुना नहीं है। महावीर भगवान के जाने के बाद यदि स्याद्वाद सुनने को मिला होगा तो वह कुंदकुंदाचार्य के समय में और कुछ रुपये में दो आना स्याद्वाद सुनने को मिला होगा तो वह कृपालुदेव के समय में!

प्रश्नकर्ता : वहाँ (अभी) स्याद्वाद नहीं है, दूसरा (अन्य) है।

दादाश्री : इन दादा के पास संपूर्ण स्याद्वाद नहीं है, तो अन्य जगह तो स्याद्वाद तो हो ही नहीं सकता न! फिर हम उस स्याद्वाद की आशा ही क्यों रखें? इन साधुओं का स्याद्वाद है, परंतु वह सामाजिक स्याद्वाद है। स्याद्वाद तो इन दादा के पास ही कुछ दिखाई देता है। जहाँ 'यथार्थ ज्ञान' होता है, वहाँ स्याद्वाद होता है!

ज्ञानी सिखाते हैं स्याद्वाद धीरे-धीरे...

प्रश्नकर्ता : यानी स्याद्वाद वाणी बोलना, वह कठिन है न? समझ में आने के बाद ही बोल सकते हैं न?

दादाश्री : बस, सिर्फ परमात्मा के अलावा स्याद्वाद वाणी कोई बोल नहीं सकता। हमारी स्याद्वाद वाणी ज़रा कच्ची, चार डिग्री कच्ची है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर हर एक मनुष्य स्याद्वाद वाणी बोलने का विचार कहाँ से कर सकेगा?

दादाश्री : लेकिन वे तो शब्द को पकड़कर नकल करने जाते हैं न! भगवान की नकल करने जाते हैं। परंतु एक अक्षर भी नहीं आता। एक भी व्यक्ति को स्याद्वाद, एक अक्षर भी नहीं आता। व्यवहारिक स्याद्वाद बोलते हैं, व्यवहार का। परंतु यथार्थ स्याद्वाद नहीं आता। और व्यवहारिक स्याद्वाद, नहीं होता। भगवान की नकल करने गए, वह नकल नहीं चलेगी। असली, हृदय से होना चाहिए, हार्टिली होना चाहिए।

स्याद्वाद उसे कहते हैं जो 'डायरेक्ट' भूल न दिखाए, वर्ना उसका घात करने के बराबर है। भ्रांत व्यक्ति को 'डायरेक्ट' भूल दिखाए तो क्या होगा?

स्याद्वाद पूरी तरह से समझ में आया आपको? स्याद् और वाद। वाद यानी ऐसा बोलना कि स्याद् हो, मतलब हर एक के धर्म को 'एक्सेप्ट' करना, हर एक की *लागणी* (लगाव) को एक्सेप्ट करना। और लोग तो क्या करते हैं? अरे, बहु से, बेटे से, बच्चों से, सभी से कहते हैं, 'आप सभी झूठे, बेअक्ल हों'! और जिस बात से किसी पर अटैक न हो और अपना काम निकाल ले, उसे स्याद्वाद वाणी कहते हैं। ऐसा थोड़ा सा मेरे पास से सीख जाएँ न, तो फिर धीरे-धीरे सीख जाएगा।

सीखो, 'हमारा' देख-देखकर

हमारे पास क्या सीखना है? किसलिए पास बैठाकर रखता हूँ, कि देख-देखकर, इनका जीवन देखो, आँखें देखो, आँखों में क्या रहता है? क्या

सपोलिए (कषाय) रहते हैं? नहीं। सपोलिए नहीं रहते। तो क्या रहता है? वीतरागता रहती है, वह सीखो। वाणी दिल को तृप्ति दे, ऐसी होती है। यानी यह सब साथ में बैठे रहने से हो जाता है। यह सब देखकर सीखना है, इसमें। यह मैं जो बोलता हूँ न, वह देखकर सीखना है। आपको मेरी तरह बोलना भी आ जाएगा, एक बार देखने से फिर। हम यह स्याद्वाद वाणी बोलते हैं, वह पढ़ने से नहीं आता। तब लोग क्या कहते हैं? आप करके दिखाओ। एक बार हम किसी से कहें कि 'देखो, टेबल पर बैठकर इस तरह से भोजन करना'। तो एक बार दिखाना पड़ता है। फिर उसे दोबारा सिखाने नहीं जाना पड़ता और किताबों में सिखाया हो, किताबों में प्लानिंग की हो और यह सिखाया हो तो? कब सीख पाएगा? किसी को जेब काटने वाले के साथ रखा हो, तो छः महीने में ऑलराइट कर देगा। एक्सपर्ट! वर्ना, बीस साल कॉलेज में जाएगा तब भी नहीं सीख पाएगा। उनके प्रोफेसर को ही नहीं आएगा वहाँ पर!

यह दर्शन करने से मन अच्छा होता है, मन मज़बूत होता है, वाणी अच्छी होती है, विचार अच्छे होते हैं, दर्शन से ही पाप धुल जाते हैं। ज्ञानी पुरुष की उपस्थिति से ही बदलाव हो जाता है। यहाँ कोई उपदेश नहीं दिया है, फिर भी वातावरण से ही बदलाव हो जाता है।

हमारी रिकॉर्ड कैसी होती है?

दो तरह से बात होनी चाहिए : व्यवहार की व्यवहार के अनुसार और निश्चय की निश्चय के अनुसार, वर्ना एकांतिक हो जाएगा। यह तो स्याद्वाद है!

और हम, लोगों के लिए जो भी बोलते हैं वैसा बोलना आप कभी भी मत सीखना, क्योंकि हमारा व्यवहार-निश्चय सहित होता है और हमारी जागृति तो बहुत अलग प्रकार की होती है। उपयोग ही अलग प्रकार का होता है और फिर हम अपनी वाणी के मालिक नहीं होते। कभी भी हम वाणी के मालिक नहीं होते। इसलिए यह वाणी पराश्रित है। अतः वह हर किसी के हिसाब के अनुसार निकलती है। पाँच शेर (ढाई किलो) हो उसे पाँच शेर वजन के बराबर लगती है और सात शेर हो तो उसे सात शेर वजन के बराबर लगेगी। जितना उसका लोड (वजन) होता है उतना काउन्टर (प्रतिपक्षी) लोड देती है यह वाणी। अतः मैं देखता रहता हूँ कि यह क्यों इन महाराज साहब की ओर बारह मण के पत्थर जैसी मार रही है? क्योंकि महाराज के पास बारह मण का लोड है, ऐसा है इसलिए उतना लगता है। मैं देखता रहता हूँ, बाकी मेरी इच्छा ही नहीं है।

हमारी वाणी में अशातना ही नहीं होती। परंतु उसे दुःख न हो इसलिए हम दूर से कहते हैं, हम रूबरू में नहीं कहते। रूबरू में पूछें तो बताते हैं, वर्ना नहीं कहते। उन्हें दुःख होगा न!

यह ओरिजिनल टेपरिकॉर्ड बोल रही है। यदि हम खुद डाँटेंगे तो हम भी वैसे हो जाएँगे।

यह सब बोला जा रहा है लेकिन उसमें एक अक्षर भी 'मैं' नहीं बोलता, पर आपका पुण्य इन शब्दों को बुलवाता है। 'यह' वाणी निकलती है, उसके द्वारा 'हम' जानते हैं कि सामने वाले का पुण्य कैसा है! 'हमारी' वाणी वह भी रिकॉर्ड है। उसमें हमें क्या लेना-देना? फिर भी 'हमारी' रिकॉर्ड कैसी होती है? स्याद्वाद! किसी भी जीव को किंचित्मात्र भी दुःख नहीं होता, हर एक का प्रमाण कबूल करे ऐसी 'यह' स्याद्वाद वाणी है।

हमारी भाषा किसी को भी दुःखदायक नहीं होती, सुखदायक हो जाती है हर एक के लिए। यह वाणी हमारी मालिकी की है ही नहीं। अहंकार

संपूर्ण शून्य हो जाए, तब रिकॉर्ड शुद्ध हो जाती है। हमें ज्ञान हो जाने के बाद रिकॉर्ड शुद्ध हो गई।

हम भी चूक गए स्याद्वाद

यह तो मैं इस जन्म में साधु-महाराज के बारे में ऐसा बोलता हूँ। इस पूरे जगत् के सभी धर्म मार्ग में, उल्टा कर रहे हैं। उन सब के लिए मैं बोलता हूँ, जैसे कि मैं ही धर्म का राजा हूँ! परंतु इस तरह से लोगों के बारे हमें उल्टा नहीं बोलना चाहिए। ये सभी लोग इससे छूटने ही चाहिए, इसलिए ऐसा बोलकर पाप मोल लिए हैं। और अगर वे पाप मुझे भुगतने के आए तो, वे पाप मुझे भुगतने पड़ते हैं। अन्य पाप नहीं है, अन्य हमारे स्वतंत्र पाप तो हैं ही नहीं। अब ऐसा बोलना पड़े तो फिर अभी क्या रहा? सिर्फ मैं बोलता ही हूँ। ऐसा बोलते समय हम भी जानते हैं कि यह गलत बोल रहे हैं। परंतु वे शब्द बाहर निकले बगैर रहते ही नहीं न!

प्रश्नकर्ता : वह तो दादा करुणा भाव से बोलते हैं न!

दादाश्री : है करुणा भाव से। लेकिन करुणा भाव से भी ऐसा नहीं होना चाहिए। यों तो हमारी वाणी स्याद्वाद ही मानी जाती है। लेकिन किसी भी धर्म वाले को किंचित्मात्र भी दुःख न हो, ऐसा हमारा यह वर्तन होता है और किसी भी जगह पर पक्षपात नहीं होता।

अब, यह किसी भी धर्म के लिए जो कहना पड़ता है न, कि यह उचित नहीं है, ऐसा कहा, वहाँ पर स्याद्वाद चूक गए। फिर भी उचित राह पर लाने के लिए ऐसा बोलना पड़ता है। परंतु भगवान तो क्या कहते हैं? यह भी उचित है, वह भी उचित है। चोर ने चोरी की वह भी उचित है, इसकी जेब कट गई वह भी उचित है। भगवान तो वीतराग, दखलंदाज़ी नहीं करते न! 'मिलावट नहीं करते न!' और हमारी तो सारी खटपट हैं। हमारे हिस्से में यह खटपट आई है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वह भी हमारे रोग निकालने के लिए न!

दादाश्री : हाँ, वह तो लोगों को तैयार करने के लिए। इसमें हेतु अच्छा है न! हमारा हेतु हमारे खुद के लिए नहीं है, सभी के लिए है।

भूल वाली वाणी मिटा देना

हमने तो क्या कहा है? यदि शब्द नहीं होते तो मोक्ष तो अत्यंत सहज है। इस काल में वाणी से ही बंधन है। इसलिए किसी के लिए अक्षर भी नहीं बोलना चाहिए। किसी धर्म के लिए नहीं बोलना चाहिए। किसी संप्रदाय के लिए भी नहीं बोलना चाहिए। उसके बावजूद भी हम बोलते हैं। हम कहते जाते हैं, वह टाइप हो चूका होता है। उसे फिर मिटा देना, ऐसा (हम) कह देते हैं। भरा हुआ माल निकल जाता है न, भला। अपनी श्रद्धा में न हो, अपने ज्ञान में न हो, वह माल भी निकलता है। टेपरिकॉर्ड है न, इसलिए!

प्रश्नकर्ता : आप तो कहते हैं न, कि जितना बोले, उससे स्पंदन हुए। इसलिए फिर वे छोड़ते नहीं हैं न!

दादाश्री : उनका फल आता है। लेकिन यहाँ टेपरिकॉर्ड में तो नहीं छपता। यहाँ जितना रोक सकते हैं, उतना तो रुक जाता है न! और ये जो स्पंदन हुए हैं न, उसमें हमें राग-द्वेष नहीं हैं। इसलिए वे हमें स्पर्श नहीं करते। हमने तो ऐसा भी कहा है कि आप यहाँ बैठे हों न, इसे तुरंत ही मिटा देना। टेप पर फिर से टाइप (रिकॉर्ड) कर लेते हैं। तो इतना सब बोलते हैं, उसमें क्या कचरा माल नहीं निकल जाता, भला? परंतु हमें फिर मिटा देना पड़ता है।

चार डिग्री से नापास, उससे भीतर उलझन

प्रश्नकर्ता : वह भूल होने का कारण क्या है?

दादाश्री : होती नहीं है, परंतु कभी-कभार उलझन हो जाती है। यह *पुद्गल* (अहंकार) का वातावरण है न! इसलिए इस तरह जोश से हमसे नहीं बोला जाता कि संपूर्ण स्याद्वाद है। चार डिग्री से नापास हूँ न, उतनी भीतर उलझन वाली होती है। संपूर्ण स्याद्वाद निकले तो समझ जाना कि इसी जन्म में मोक्ष में जाएँगे। हमारी (वाणी) ज़्यादातर स्याद्वाद निकलती है और कुछ नहीं निकलती। इसलिए हम इस जन्म में मोक्ष में नहीं जाएँगे।

क्या हमारी स्याद्वाद वाणी नहीं है? ज़्यादातर वाणी स्याद्वाद ही होती है। लेकिन हम ऐसा जो कहते हैं न, कि 'ये कुछ फँलाने ऐसे हैं, वैसे हैं', ऐसा हमें नहीं बोलना चाहिए। आपको समझाने के लिए, आपको विस्तारपूर्वक समझाने के लिए बोलते हैं। उनके प्रति हमें राग-द्वेष नहीं हैं। फिर भी ऐसा बोलना, यह तो स्याद्वाद नहीं कहलाता।

वे अपनी जगह पर सही हैं। आप क्यों टीका कर रहे हैं? फिर भी समझाने के लिए मुझे बात करनी पड़ती है। हमें किसी की निंदा नहीं करनी है। आप पर इसका उल्टा असर न हो, आप उल्टे रास्ते पर न जाओ और इससे मुक्त हो जाओ, इसलिए हम कहते हैं।

भूल सहित वर्तन, भूल रहित दर्शन

अभी तो कोई बात निकलती है, तो किसी महान पुरुष का भी उसमें अंदर हाथ कट जाता है। यह हाथ कट जाता है यानी क्या? गलत को हमें गलत भी नहीं बोलना चाहिए। हमें क्या बोलना चाहिए? जगत् में कोई भी जीव दोषित हैं ही नहीं, ऐसी वाणी निकलनी चाहिए। अब, दोषित को दोषित कहें, वह वाणी हमारी भूल वाली कही जाएगी। जगत् उसे भूल नहीं कहेगा, परंतु हमें खुद को समझ में आ जाता है कि यह भूल है।

हमें पूरा जगत् निर्दोष दिखाई देता है लेकिन वह श्रद्धा में है। श्रद्धा में यानी दर्शन में है। और अनुभव में आया है कि निर्दोष ही है। अनुभव में 'हंड्रेड परसेन्ट' आ गया है कि निर्दोष ही हैं। फिर भी वर्तन जो है, वह अभी भी नहीं छूटता!

अभी किसी फलाने संत की बात आए। वे चाहे कैसे भी हों, फिर भी हमें तो वे निर्दोष ही दिखाई देने चाहिए। फिर भी हम ऐसा बोलते हैं कि 'ऐसे हैं, ऐसे हैं', वह नहीं बोलना चाहिए। हमारी श्रद्धा में वे निर्दोष हैं, ज्ञान में आ गया है कि वे निर्दोष हैं। फिर भी यह वर्तन में बोल देते हैं। इसीलिए इस वाणी को हम टेपरिकॉर्ड कहते हैं न! टेपरिकॉर्ड हो चुकी है, उसका क्या हो सकता है? सारी टेपरिकॉर्ड इफेक्टिव है न। और सामने वाले को तो ऐसा ही लगता है न कि अभी यह दादा ने ही बोला।

प्रश्नकर्ता : यह बोलते समय इसे भूल कहते हैं, ऐसा आपको अंदर रहता है?

दादाश्री : हाँ, बोलते समय, 'ऑन द मॉमेन्ट' (तत्क्षण) पता होता है, कि यह गलत हो रहा है, यह गलत बोल रहे हैं।

प्रश्नकर्ता : वह ठीक है। लेकिन 'उन संत की यह भूल है', ऐसा जब बोल रहे होते हैं, उस समय ऐसा पता होता है न, कि उनकी इस संदर्भ में ऐसी भूल हैं?

दादाश्री : हाँ, किस संदर्भ में उनकी भूल

है, वह जानते हैं। लेकिन वह मान्यता तो पहले की थी न! यह सब, उससे पहले का ज्ञान था। यानी यह आज की टेपरिकॉर्ड नहीं है।

प्रश्नकर्ता : यानी पहले का ज्ञान इस टेप में, बोलने में 'हेल्प' करता है?

दादाश्री : हाँ। जबकि अभी तो वह बोल ही रहा है। पर लोग तो ऐसा ही समझते हैं न कि, 'यह जो दादा बोले, अभी दादा बोले'। परंतु मैं जानता हूँ कि 'यह पहले का है'। फिर भी हमें खेद तो होता रहता है न! ऐसा नहीं निकलना चाहिए, एक अक्षर भी उल्टा नहीं निकलना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : अब, यदि जैसा है वैसा नहीं कहेंगे, तो सुनने वाले सभी गलत रास्ते पर चले जाएँगे, ऐसा हो सकता है न?

दादाश्री : सुनने वाले? परंतु वह बुद्धि की दखल ही है न! वीतरागता को कोई दखल नहीं है न!

प्रश्नकर्ता : परंतु सुनने वाले तो बुद्धि के अधीन ही होते हैं न?

दादाश्री : हाँ। परंतु मेरी बुद्धि में इन सुनने वालों को नुकसान होगा यानी नुकसान और फायदा, 'प्रॉफिट एन्ड लॉस' देखा न? 'प्रॉफिट एन्ड लॉस' तो बुद्धि दिखाती है, कि सामने वाले को नुकसान होगा! फिर भी अभी हमने इन संत के बारे में बोला, लेकिन आज यह काम का नहीं है। परंतु उस समय हम ऐसा नहीं मानते थे कि यह जगत् पूरा निर्दोष है।

प्रश्नकर्ता : उस समय बुद्धि की दखल थी, ऐसा हुआ न?

दादाश्री : हाँ, उस समय बुद्धि की दखल थी। इसलिए यह दखल जल्दी नहीं जाती न!

प्रश्नकर्ता : यानी सारा वर्तन पहले के ज्ञान की वजह से ही है न?

दादाश्री : पहले जब तक बुद्धि थी न, तब तक चुभता था। परंतु बुद्धि जाने के बाद ऐसा चुभता नहीं न! वर्ना, बुद्धि हमेशा ही हर एक को चुभती रहती है। हमेशा ही, जब तक बुद्धि है, तब तक कम्पेयर एन्ड कोन्ट्रास्ट चलता ही रहता है।

प्रश्नकर्ता : और इस ज्ञान के बाद सिद्धांत दिया है न, कि यह निर्दोष है।

दादाश्री : यानी है निर्दोष, फिर किसलिए ऐसा होता है? हमने स्पष्ट कहा है कि पूरा जगत् निर्दोष है। और एक तरफ ये शब्द ऐसे निकलते हैं! अब, वह दोषित हमारी मान्यता में नहीं है, हमारे ज्ञान में नहीं है, परंतु इस चारित्र में है। इसलिए किसी को भी दोषित हम देख नहीं सकते। हम किसी को दोषित देखते भी नहीं हैं। परंतु वाणी में निकल जाता है कि 'इसका दोष है'। दोषित है उसे भी दोषित नहीं कहना चाहिए। यह दोषित है, यह तो सापेक्षभाव से है। निरपेक्षभाव में ऐसा कुछ है ही नहीं। भगवान ने जो जगत् देखा है, वह तो और ही प्रकार का है। हम उसी देखे हुए में रहते हैं, उसी ज्ञान में रहते हैं इसलिए हमें आनंद रहता है।

भारी शब्दों के विरोध में करवाते हैं प्रतिक्रमण

और साथ ही साथ हमारी प्रतीति में है कि कोई दोषित नहीं है। प्रतीति में निर्दोष है। वह प्रतीति पूरी ही बदली हुई है। अर्थात् निर्दोष है, ऐसा मानकर मैं यह बोलता हूँ।

प्रश्नकर्ता : निर्दोष है, ऐसा समझकर बोलते हैं?

दादाश्री : हाँ।

प्रश्नकर्ता : तो फिर आपको प्रतिक्रमण क्यों करने पड़ते हैं?

दादाश्री : लेकिन नहीं बोलना चाहिए, एक शब्द भी नहीं बोलना चाहिए। ऐसा गलत शब्द भी क्यों बोला? यहाँ पर सामने वाला (व्यक्ति) तो है ही नहीं। सामने वाले को दु:ख नहीं होता है। और आप सब को हर्ज नहीं है कि दादा को अपनी बिलीफ में तो सब निर्दोष ही है। फिर ऐसे भारी शब्द क्यों बोले? इसलिए प्रतिक्रमण करने पड़ते हैं। भारी शब्द भी नहीं होना चाहिए।

इस दुनिया में सभी निर्दोष हैं। फिर भी देखो, ऐसी वाणी निकल जाती है न! हमने तो इन सब को निर्दोष देखा है, एक भी दोषित नहीं है। हमें दोषित दिखता ही नहीं है, सिर्फ दोषित बोला जाता है। क्या हमें ऐसा बोलना चाहिए? क्या हमें ऐसा अनिवार्य है? किसी के लिए भी नहीं बोल सकते। उसके बाद तुरंत ही उसके प्रतिक्रमण चलते रहते हैं। उतनी यह हम में चार डिग्री कम हैं, उसका यह फल है। लेकिन प्रतिक्रमण किए बगैर नहीं चलता है।

प्रश्नकर्ता : आप तो अलग ही रहते हैं, तो फिर प्रतिक्रमण किसलिए?

दादाश्री : अलग हैं, इसलिए प्रतिक्रमण 'मुझे' नहीं करने हैं। यह अंदर ही अंदर, जो करते हैं न, जो बोलते हैं न, उनसे ही कहना है, कि 'आप प्रतिक्रमण कर लो'। और आपके लिए भी ऐसा ही है। यह जो प्रतिक्रमण है, वह 'आपको' नहीं करने हैं, 'चंदूभाई' से कह देना है। 'आपको' प्रतिक्रमण नहीं करने हैं। जिसने अतिक्रमण किया न, उसी को प्रतिक्रमण करना है।

प्रश्नकर्ता : उस भूल का प्रतिक्रमण कैसे करते हैं?

दादाश्री : फिर प्रतिक्रमण करने पड़ते हैं। भूल, ज्ञान से संबंधित नहीं होती है। जब कोई स्याद्वाद के विरोध में जा रहा हो तब उस व्यक्ति पर सख्ती हो जाती है। यदि स्याद्वाद हो तो सख्ती नहीं होनी चाहिए, बिल्कुल संपूर्ण स्याद्वाद! यह तो स्याद्वाद कहलाता है, लेकिन संपूर्ण स्याद्वाद नहीं कह सकते न! जब केवलज्ञान हो जाएगा तब संपूर्ण स्याद्वाद!

यानी वाणी, वह तो मुख्य चीज़ है। मनुष्य की वाणी बदलती नहीं है। उसे बदलने में तो बहुत टाइम लगता है। वाणी बदलती है तब स्याद्वाद वाणी होती है। तब जगत् उन्हें कहता है, कि ये ज्ञानी पुरुष हैं। तब तक बदलती रहेगी। धीरे-धीरे भीतर जैसे-जैसे परमाणु बदलेंगे, वैसे वह वाणी खुद बदलती रहेगी। पहले माइल्ड होते-होते मुलायम होती जाएगी, रेशमी होती जाएगी।

कारण सेवन की समझ, कार्य सुधारे

यानी वाणी सुधारने की ज़रूरत है न?

प्रश्नकर्ता : वाणी सुधारने की इच्छा रखें, तो वाणी में सुधार होगा?

दादाश्री : हाँ, सुधारने की इच्छा रखें और आप ऐसा कुछ प्रयोग करेंगे तो होगा। वाणी सुधारना यानी क्या? वाणी सभी को पसंद आनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : आप कहते हैं न, वाणी तो टेप हो चुकी ही होती है?

दादाश्री : हाँ, टेप हो चुकी है। इसलिए वाणी नहीं बदलेगी। उसे बदलने जाएँगे, तब भी नहीं बदलेगी। वह कोई कपड़े वगैरह नहीं हैं कि जिन्हें बदल सकते हैं। यानी वाणी को नहीं बदला जा सकता। वह तो कुछ कारण सेवन करे, उसका परिणाम है। यानी 'इस वाणी को सुधारना है, इस वाणी को सुधारना है', ऐसी भावना पूरे दिन होती

रहेगी, तो सुधर जाएगी। ऐसे कारणों का सेवन करेंगे तो फिर सुधार होगा। कारण का सेवन तो करना ही पड़ेगा न!

हम निश्चय करें कि, 'किसी को दुःख न हो ऐसी वाणी बोलनी है, किसी भी धर्म को अड़चन न हो, किसी भी धर्म का प्रमाण न दुभे ऐसी वाणी बोलनी चाहिए', तब वह वाणी अच्छी निकलेगी। 'स्याद्वाद वाणी बोलनी है', ऐसा भाव करेंगे तो स्याद्वाद वाणी उत्पन्न हो जाएगी।

प्रश्नकर्ता : लेकिन इस जन्म में रटते ही रहे कि, 'बस, स्याद्वाद वाणी ही चाहिए' तो वह हो जाएगी क्या?

दादाश्री : परंतु यह 'स्याद्वाद' समझकर बोलेगा तब। वह खुद समझता ही न हो और बोलता ही रहे या गाता ही रहे तो इससे कुछ नहीं होगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन हम ऐसा कहें कि 'दादा की वाणी जैसी ही वाणी चाहिए', तो?

दादाश्री : 'चाहिए', ऐसा बोलने से कुछ नहीं होता न! वह तो, ऐसी वाणी की भावना करनी पड़ती है। वाणी, वह तो फल है। बीज डालना है। किसी भी जीव को किंचित्मात्र दुःख नहीं हो, ऐसी वाणी बोलने की भावना हो इससे वैसी टेप तैयार हो जाती है। वैसी वाणी रिकॉर्ड हो जाती है। 'अपनी भावना क्या है' उस पर से कोडवर्ड बनता है।

यह 'ज्ञान' मिलने के बाद खुद को वह आशय निर्धारित करना आ जाता है। 'ज्ञान' मिलने से पहले तो किसी आशय का भान ही नहीं होता है न! तब वह किसी भी तरह का निर्धारित हो जाता है। अब जैसा आशय निर्धारित करेंगे वैसा मिल जाता है।

किसकी वाणी अच्छी निकलती है? जो उपयोगपूर्वक बोलता है। अब, उपयोग वाला कौन होता है? ज्ञानी होते हैं। उनके अलावा उपयोग वाला कोई होता नहीं। यह मैंने 'ज्ञान' दिया है, उन्हें 'ज्ञान' होता है, उनकी वाणी उपयोगपूर्वक निकल सकती है। वे पुरुषार्थ करे तो उपयोगपूर्वक हो सकता है। क्योंकि 'पुरुष' होने के बाद का पुरुषार्थ है। 'पुरुष' होने से पहले पुरुषार्थ है नहीं।

वाणी, 'टेपरिकॉर्ड' के स्वरूप में

प्रश्नकर्ता : इच्छा अनुसार बोलना हो तो कैसे बोल सकते हैं?

दादाश्री : बोल ही नहीं सकते। वह तो, इच्छा अनुसार बोलना हो तो कब बोल सकते हैं? वैसी टेप की हुई होनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : लेकिन आप तो इच्छा अनुसार बोल सकते हैं न?

दादाश्री : नहीं। ऐसा मुझसे नहीं बोला जाता। इसीलिए तो मुझे यहाँ यह कहना पड़ता है, खुला करना पड़ता है कि यह टेपरिकार्ड है।

देखो, मैं आपको बताता हूँ। किसी की भूल निकालने की मेरी इच्छा नहीं होती। मैं सभी को, मैं पूरे जगत् को कैसे देखता हूँ? निर्दोष ही देखता हूँ। जो हो गया उसके लिए, जो होगा उसके लिए, सभी के लिए मैं निर्दोष ही देखता हूँ। और उसके बाद मैं आगे बोलता हूँ कि, 'इन लोगों ने उल्टा डाल दिया, ऐसा कर दिया'। यानी कहना क्या चाहता हूँ कि ये लोग दोषित हैं। अब इस वाणी की मुझे ज़रूरत नहीं है। फिर भी यह वाणी, यह टेपरिकॉर्ड निकलती रहती है। ज़रूरत नहीं है, इच्छा भी नहीं है, फिर भी टेपरिकॉर्ड निकलती रहती है।

प्रश्नकर्ता : जब आपकी इच्छा अनुसार वाणी निकलेगी न, तब कुछ भी नहीं हो सकेगा।

दादाश्री : जब मेरी इच्छा अनुसार वाणी निकलेगी न, तब कोई भी यह दर्शन नहीं कर पाएगा। मुझसे मिल ही नहीं पाएगा। यानी यह जो वाणी है, यह दखल वाली वाणी है, तब तक सभी लोग मिलेंगे। वर्ना फिर कैसे मिल पाएँगे वे? हो गया, खत्म हो गया, एन्ड आ गया! वाणी इच्छा अनुसार निकले न, वही मोक्ष है! वीतरागों की वाणी इच्छा अनुसार निकलती है। हमारी वाणी इच्छा अनुसार से थोड़ी सी, इतनी कम है। वह भी इस जन्म में कुछ ही निकलेगी। वर्ना थोड़ी सी ही बाकी रहेगी।

पहले तो मैं बहुत बोलता था। क्योंकि इन लोगों का उल्टा देखकर सहन नहीं होता था, इसलिए उल्टी वाणी निकल जाती थी। परंतु अंदर जानता भी था कि ये निर्दोष हैं, फिर भी वाणी निकल जाती थी।

प्रश्नकर्ता : परंतु ऐसी उल्टी वाणी लोगों के आधार पर ही निकलती है न?

दादाश्री : हाँ, उनके आधार पर ही निकलती है। परंतु व्यवहार में जिम्मेदारी तो मेरी ही मानी जाएगी न?

प्रश्नकर्ता : यदि ऐसा मानेंगे तो दुनिया में कुछ हो ही नहीं सकेगा।

दादाश्री : ये वीतराग, तीर्थंकर जिम्मेदार नहीं माने गए। उनकी वाणी ऐसी निकलती है कि वे जिम्मेदार नहीं माने गए हैं।

प्रश्नकर्ता : जिम्मेदार नहीं माने जाते, तो फिर कल्याण कैसे होता है?

दादाश्री : वह तो, उनके दर्शन करके जिनका कल्याण होने वाला हो, उनका हो जाता है। किसी का रूक गया हो तो उनके दर्शन करने से उसका प्रकट हो जाता है, बस! बहुत से लोगों का रूक गया हैं। वे तो सिर्फ निमित्त हैं, अंतिम निमित्त! और इसीलिए मैं कहता हूँ न, कि यह 'ज्ञान' देने के बाद सिर्फ तीर्थंकर के दर्शन होंगे न, कि छुटकारा! दर्शन की ही ज़रूरत रही। तीर्थंकरों (का दर्शन) वह अंतिम दर्शन कहलाता है, फुल दर्शन!

मालिकी रहित स्याद्वाद वाणी

प्रश्नकर्ता : लेकिन यह 'ज्ञान' देने के बाद तीर्थंकर भगवान के दर्शन होंगे, वह तो हंड्रेड परसेन्ट है न?

दादाश्री : हाँ, होंगे ही न! उसमें दो मत ही नहीं है न!

प्रश्नकर्ता : इच्छा अनुसार वाणी निकले, उसी को मोक्ष कहते हैं। तो वीतरागों की वाणी इच्छा अनुसार निकलती हैं, ऐसा कहा वह समझ में नहीं आया।

दादाश्री : इच्छा अनुसार यानी, वीतरागों को तो इच्छा भी नहीं करनी पड़ती। परंतु लोगों को अनुकूल आए, उसे इच्छा अनुसार ही वाणी कही जाती है। सभी लोगों को, किसी को भी हर्ज़ न हो, ऐसी वाणी, जिसे स्याद्वाद कहा जाता है।

स्याद्वाद वाणी यहाँ से शुरू होती है, यह मैं बोलता हूँ, वहाँ से शुरू होती है। लेकिन वे तीर्थंकर बोलते हैं वहाँ संपूर्ण स्याद्वाद पूर्ण हो जाती है। अब, हमारी वाणी तो कोई खास ऐसी नहीं निकलती। क्योंकि यह अस्त होती हुई चीज़ है न! इसलिए इससे परेशानी नहीं होती। परंतु जगत् क्या कहता है? 'ऐसा क्यों बोले आपके

दादा?' क्योंकि जगत् तो जैसा है वैसा ही कहेगा, जैसा दिखेगा वैसा बोलेगा।

प्रश्नकर्ता : अभी आपकी यह वाणी निकल रही है इसमें बहुत सा भाग तो स्याद्वाद ही है।

दादाश्री : इसे स्याद्वाद ही कहते हैं। क्यों स्याद्वाद कहते हैं, क्योंकि यह अलग वाणी निकलती है न, इसमें कर्ताभाव नहीं है। यह मालिकी रहित वाणी है इसलिए स्याद्वाद कहलाती है। जब से वाणी मालिकी रहित होती है न, तब से स्याद्वाद कहलाती है। भगवान की वाणी भी मालिकी रहित हैं।

प्रश्नकर्ता : अब, यह किसी को दोषित ठहराए, ऐसी वाणी निकलती है, उस समय भी वाणी का मालिकीपन तो भीतर नहीं है न?

दादाश्री : वह मालिकीपन नहीं है, इसलिए तो इसे स्याद्वाद वाणी कहा है। अब, यह वाणी निकलती है, वह तो लोगों को समझाने के लिए निकलती है। हाँ, मुझे कुछ लेना-देना नहीं है, उसे समझाने के लिए निकलती है। परंतु पब्लिक इस बात को गुनाह मानती हैं।

'केवलदर्शन' दिखाए भूल

हमारा ज्ञान अविरोधाभासी है और वाणी (संपूर्ण) स्याद्वाद नहीं है। इसमें कोई झपट में आ जाता है और तीर्थंकरों की वाणी में कोई झपट में नहीं आता है। वह तो संपूर्ण स्याद्वाद! वे झपट में लिए बिना बोलते हैं। बातें तो वे वैसी ही बोलते हैं, लेकिन झपट में लिए बिना।

प्रश्नकर्ता : आपके इस स्याद्वाद में कोई झपट में आ जाता है इसलिए संपूर्ण नहीं कहा गया है, फिर भी वह दर्शन तो संपूर्ण है न, कि स्याद्वाद में भूल हो गई?

दादाश्री : हाँ, दर्शन तो संपूर्ण, दर्शन में कोई कमी नहीं है। ज्ञान भी है लेकिन ज्ञान में चार डिग्री कम है। इसलिए यह (संपूर्ण) स्याद्वाद नहीं होती। हमें दर्शन संपूर्ण होता है। दर्शन में सब तुरंत ही आ जाता है। तुरंत भूल का पता चल जाता है। सूक्ष्मातिसूक्ष्म भूल का भी तुरंत पता चल जाता है। आपको तो अभी ऐसी भूलों को देखने में बहुत टाइम लगेगा। आप तो स्थूल भूलें देखते हो। बड़ी-बड़ी जो दिखाई दें, ऐसी भूलें ही देखते हो। इसलिए हम कहते हैं न, कि हमारा दोष होता है, फिर भी किसी को हमारा यह दोष दिखाई नहीं देता है, हमें अपना (दोष) दिखाई देता है।

प्रश्नकर्ता : स्याद्वाद में भूल हो गई, ऐसे सभी दोष दिखाई देते हैं?

दादाश्री : स्याद्वाद-अनेकांत में भूल हो गई, ऐसे सभी दोष दिखाई देते हैं। अब हमारा स्याद्वाद पूर्णता की ओर जा रहा है। स्याद्वाद के संपूर्ण हो जाने पर केवलज्ञान पूर्ण हो जाता है। दर्शन है, इसीलिए तो पता चलता है कि 'यह भूल है'। 'फुल' (पूर्ण) दर्शन है, इसलिए सभी से कहा है न, कि 'केवलदर्शन' देता हूँ (ज्ञान देते समय)।

हमें प्रतिक्रमण करने पड़ते हैं। हमारे मुँह से निकलता रहता है। देखो न, हमारा उतना अनिवार्य है। कभी-कभी आचार्य के बारे में बोला जाता है! बाकी, किसी के भी बारे में नहीं बोलना चाहिए। इस दुनिया में सभी निर्दोष हैं, ऐसा जानते हैं। फिर किसी के बारे में बोलना चाहिए क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं बोलना चाहिए।

दादाश्री : ऐसी ही वाणी निकलती है और बाद में तुरंत ही उसके लिए हमारे प्रतिक्रमण चलते रहते हैं। अरे देखो न, कैसी दुनिया है!

जो वाणी बोलते हैं, उस पर ही अलग अभिप्राय। यह दुनिया कैसी है! जो वाणी बोलते हैं, उस पर अभिप्राय कैसा है कि यह ऐसा नहीं है। यह गलत है, ऐसा नहीं होना चाहिए। लेकिन यह दुनिया कैसी चल रही है, उसके साथ जागृति में रहकर चलते हैं।

बोलते हैं और साथ ही ऐसी जागृति रहती है कि ऐसा नहीं होना चाहिए। क्योंकि हमने पूरे जगत् को निर्दोष देखा है। (ऐसा अनुभव में है), सिर्फ (वर्तन में) नहीं आया है। वह (वर्तन में) क्यों नहीं आया? तो यह जो वाणी है, वह दखल करती है।

प्रश्नकर्ता : दखल करती है, फिर भी आपकी तो निरंतर जागृति है।

दादाश्री : जागृति है, परंतु जब तक ऐसी वाणी बंद नहीं होगी, तब तक पूर्णपद तो मिल ही नहीं सकता न! यह वाणी कैसी निकलती है? ऐसी जोशीली!

अब यह वाणी कब भरी थी? जब जगत् निर्दोष देखा नहीं था, उस वक्त भरी थी कि 'ये, ये ऐसे दोषित, ऐसा क्यों करते हैं? ऐसा क्यों करते हैं? यह ऐसा नहीं होना चाहिए। जैन धर्म ऐसा क्यों है? वह जो भरा था, वह आज निकल रहा है। तब के अभिप्राय आज निकल रहे हैं। और आज उन अभिप्राय से हम सहमत नहीं हैं।

शुद्धता, 'भगवान' की और 'ज्ञानी' की

ऐसा है न, भगवान तो मानो शुद्ध ही हैं। हम भी शुद्ध हैं। परंतु हम भावशुद्ध हैं और भगवान सर्व शुद्ध हैं। हमारा भावशुद्ध है इसलिए हमारी वाणी में कभी-कभार फर्क वाला निकल जाता है, थोड़ा सा फर्क रहता है। क्योंकि वाणी, वह द्रव्य है, पहले का रिज़ल्ट है यह वाणी। और आज हमारी परीक्षा संपूर्ण है। इसलिए इसका रिजल्ट (परिणाम) संपूर्ण आएगा। परंतु अभी जो वाणी बोल रहे हैं, वह पहले का रिजल्ट है, इसलिए इसमें ज़रा कमी हो सकती है।

प्रश्नकर्ता : आपने कहा कि भगवान शुद्ध हैं, परंतु हम भावशुद्ध हैं। तो ये भगवान और हम, वह 'हम' यानी कौन सा विभाग है?

दादाश्री : जब तक ये वाणी के दोष हैं न, वाणी के दोष या ऐसे कोई दोष हो जाते हैं कभी और यह सब बोलते हैं इस टेपरिकॉर्ड में, उसका मालिक मैं नहीं हूँ। लेकिन फिर भी उसका दोष तो देखना है न, कि टेपरिकॉर्ड ऐसी क्यों छप गई होगी? यानी पहले भूल हुई है, उसे एक्सेप्ट (स्वीकार) करना पड़ेगा। पहले की भूल को आज एक्सेप्ट करके उसे साफ कर देना चाहिए। यानी कि जब तक ऐसे दोष हैं तब तक भगवान जुदा (अलग) हैं, भेद है। और वह भी कितने टाइम? कुछ ही टाइम और कुछ टाइम हम भगवान के साथ एकाकार होते हैं, अभेद स्वरूप हैं! यानी कुछ टाइम ज़रा भेद रहता है। वह भेद स्वरूप कब जाएगा? ये जो पहले की वाणी कचरे वाली निकलती है, वह जब नहीं निकलेगी और बिल्कुल स्याद्वाद वाणी निकलेगी तब भेद चला जाएगा।

यह वाणी ही अलग प्रकार की

यह जो हमारी टेपरिकॉर्ड निकल रही है, उसमें और तीर्थंकरों की देशना में फर्क इतना ही है कि यह आम पेड़ पर नहीं पका है और तीर्थंकरों का आम पेड़ पर पका हुआ है। इसलिए यह थोड़ा फीका लग रहा है। उतना रसास्वाद इसमें नहीं आता है। क्योंकि आम पेड़ पर पका हुआ नहीं है। वर्ना मनुष्य मंत्रमुग्ध हो जाते। अभी भी मंत्रमुग्ध हो जाते हैं, पर थोड़ा फीका है।

लेकिन सभी अपनी-अपनी भाषा में समझ जाते हैं। वैष्णव हों, स्वामीनारायण वाले हों, जैन हों, मुस्लिम हों, दिगंबर हों, लेकिन वे सभी अपनी-अपनी भाषा में समझ जाते हैं, मैं क्या कहना चाहता हूँ, वह।

अभी यहाँ पर मुसलमान, पारसी, स्थानकवासी, दिगंबरी, श्वेतांबरी, सभी जैन, वैष्णव, शिवधर्मी वे सभी हमारी वाणी सुनते, तो सभी को एक समान लगती है। उनके मन में थोड़ा सा भी नहीं होता कि यह पक्षपाती वाणी निकल रही है। वर्ना उठकर चलने लगते। यह वाणी भी, इससे किसी भी धर्म का किंचित्मात्र प्रमाण न दुभे, ऐसी होती है और मीठी होती है। यहाँ से उठने का मन नहीं होता। सुनते-सुनते सुबह हो जाए फिर भी उठने का मन नहीं होता। यदि अभी ज्ञानियों की वाणी इतनी मीठी है, तो (तीर्थंकर) भगवान की वाणी कितनी मीठी होगी!

ओहोहो! तीर्थंकर की स्याद्वाद वाणी

तीर्थंकर भगवान वे केवलज्ञान सहित होते हैं। केवलज्ञान तो अन्य लोगों को भी होता है, केवलियों को भी होता है, पर तीर्थंकर भगवान यानी तीर्थंकर (गोत्र) कर्म का उदय चाहिए। जहाँ उनके चरण पड़ते हैं वहीं तीर्थ बन जाता है। पूरे वर्ल्ड में किसी का भी वैसा पुण्य नहीं होता है। उस काल में जब तीर्थंकर होते हैं न, तब किसी के वैसे परमाणु नहीं होते हैं, उनकी बॉडी (शरीर) के परमाणु, उनकी स्पीच (वाणी) के परमाणु, ओहोहो! स्याद्वाद वाणी! सुनते ही सभी के हृदय तृप्त हो जाए, ऐसे वे तीर्थंकर महाराज!

अरिहंत तो सबसे बड़ा रूप है। पूरे ब्रह्मांड में उस समय वैसे परमाणु किसी के नहीं होते। सभी उच्चत्तम परमाणु सिर्फ उन्हीं के शरीर में एकत्र हुए होते हैं। तो वह शरीर कैसा! वह वाणी कैसी! वह रूप कैसा! उन सभी बातों का क्या कहना! उनकी तो बात ही अलग है न! अर्थात् उनकी तुलना तो करना ही नहीं, किसी के साथ! तीर्थंकर की तुलना किसी के साथ नहीं की जा सकती, ऐसी ग़ज़ब की मूर्ति कहलाते हैं! चौबीस तीर्थंकर हो गए, पर सभी ग़ज़ब की मूर्तियाँ!

तीर्थंकर पद, वह तो पूरी दुनिया में सब से बड़ा पद है। ये जो सारे परमाणु हैं न, उनमें से सभी उच्चतम परमाणु खिंचकर वहाँ पर फिट हो जाते हैं। शरीर तो पूरा परमाणुओं से ही बना होता है, लेकिन उच्चतम परमाणु। उनके शरीर का आकार अलग, उनकी हड्डी-खून अलग, बहुत सुंदर! शरीर ऐसा कि सहज ही आकर्षण हो जाए। वह वाणी अलग होती है। बहुत ही मधुर, अत्यंत मधुर होती है, स्याद्वाद वाणी! स्याद्वाद अर्थात् मुस्लिम, पारसी ऐसी अन्य सभी अठारह जातियाँ हों, किसी को भी वाणी दु:खदायी न हो, ऐसी होती है। ज़रा सा भी, इतना भी किसी के धर्म का नुकसान नहीं हो, ऐसी वाणी होती है। यानी वे तीर्थंकर कितने सुंदर थे!

तीर्थंकर भगवान की देशना अलग तरह की होती है। कम्पलीट (संपूर्ण) स्याद्वाद वाणी! किसी भी धर्म का, कहीं पर किंचित्मात्र खंडन नहीं होता। और यहाँ तो सभी तरह के स्पष्टीकरण देने होते हैं न, इसलिए कुछ धर्मों का खंडन हो जाता है। देशना फूल स्टेज की होनी चाहिए। हमारी फूल स्टेज की नहीं कहलाती। स्याद्वाद वाणी है लेकिन स्याद्वाद वास्तविक स्टेज पर नहीं बैठा है। फूल स्टेज की देशना तो, वह वाणी ही अलग तरह की होती है, उसका रस अलग तरह का होता है।

प्रश्नकर्ता : उसे देशना ही क्यों कहा होगा? कोई दिशा बता रही है इसलिए?

दादाश्री : वह सर्व सामान्यपन बता रही है। यानी किसी को भी बाधक नहीं होनी चाहिए। उपदेश तो बाधक भी हो सकता है। देशना हर एक पर लागू होती है। कोई भी जाति वाले बैठे हुए हों, कोई भी धर्म वाले बैठे हुए हों, परंतु देशना को वे सुनते रहते हैं। तीर्थंकर की देशना सामुदायिक होती हैं। उसमें ज़रा सा भी पोतापन नहीं होता। देशना अनेकांत होती हैं। इसलिए एकांतिक रूप से किसी को भी स्पर्श नहीं करती, सभी के काम आती हैं।

तीर्थंकरों का संपूर्ण और हमारा अपूर्ण स्याद्वाद

स्याद्वाद वाणी किसी के लिए दु:खदायी नहीं होती।

प्रश्नकर्ता : तो उतनी निरपेक्षता हुई।

दादाश्री : हाँ, उतनी तो है, परंतु वह अभी मूल निरपेक्षता तक नहीं पहुँची है। एब्सल्यूट होनी चाहिए। हमारी यह वाणी एब्सल्यूट नहीं कहलाती।

तीर्थंकर साहब, वे देह के मालिक घड़ी भर भी नहीं होते। उनका ज्ञान सीमित नहीं होता, अन्लिमिटेड होता है। हमारा ज्ञान अन्लिमिटेड से ज़रा सा कम है। यानी तीर्थंकरों का संपूर्ण होता है और हमारा ज़रा सा कम होता है। उनका स्याद्वाद होता है और हमारा भी स्याद्वाद होता है परंतु थोड़ा फर्क होता है।

प्रश्नकर्ता : तो यथार्थ स्याद्वाद कैसा होता है?

दादाश्री : वह स्याद्वाद तो, अभी हम कुछ बोलते हैं न, तो मन में तो कुछ भी नहीं होता। परंतु किसी व्यक्ति पर ज़रा सा खराब असर हो जाता है, ऐसा होता है और यदि संपूर्ण स्याद्वाद हो तो ऐसा होता ही नहीं है। फिर सामने वाला उल्टा बोले वह बात अलग है, परंतु उसका हृदय कबूल करता है। हमारा स्याद्वाद चार डिग्री कच्चा है। हमें खुद को समझ में आता है न! सभी बाबत में चार डिग्री कच्चा है और उसे हमें पक्का करना भी नहीं है। यह कच्चा है, इसलिए तो हम आपके साथ बैठे रहते हैं न!

कोई व्यक्ति गलत बोलता है, उल्टा बोलता है, चाहे कुछ भी करे, उसमें उसका दोष नहीं है। वह कर्म के उदय के अधीन करता है। पर आप उदय के अधीन बोल रहे हो, उसके जानकार होने चाहिए कि, 'यह गलत बोल दिया'। क्योंकि पुरुषार्थ है। 'प्रकृति क्या कर रही है', उसे जानना चाहिए। और जब प्रकृति कुछ भी न करे, थोड़ा भी हिंसक वर्तन नहीं, हिंसक वाणी नहीं, हिंसक मनन नहीं, उस दिन तीन सौ साठ डिग्री हो गई होगी।

स्याद्वाद अर्थात् सेन्टर को 360 डिग्री

प्रश्नकर्ता : स्याद्वाद वाणी बोलने के लिए, कौन-कौन से मुद्दे ध्यान में रखने चाहिए?

दादाश्री : स्याद्वाद वाणी में 360 डिग्री के सभी प्रमाण में से किसी का भी प्रमाण न दुभे, इस तरह से वाणी बोलनी चाहिए। वह फिर चाहे मुस्लिम धर्म वाला बैठा हो या जैन धर्म वाला बैठा हो या किसी भी धर्म वाला बैठा हो, परंतु दु:ख नहीं होना चाहिए। एक पक्षीय वाणी न हो, उसे स्याद्वाद वाणी कहते हैं।

स्याद्वाद अर्थात् 360 डिग्री। ये सभी धर्म वाले, एक डिग्री वाले, दूसरी डिग्री वालों को गलत कहते हैं। अब, ये 360 डिग्री में सभी मनुष्यों के धर्म आ जाते हैं। वस्तु सेन्टर में हैं। सेन्टर की वस्तु के लिए हर एक के व्यू पोइन्ट अलग-अलग हैं। सेन्टर में देखने के लिए हर एक के अलग-अलग व्यू पोइन्ट होते हैं। यानी कि लोगों में स्वाभाविक रूप से मतभेद होते ही

हैं। 150 डिग्री वाला 125 डिग्री वाले को देखता है तो डिफरन्स होता है। वह स्वाभाविक डिफरन्स होता है। वे मतभेद भी आपके स्वाभाविक हैं। ऐसा मैं कहता हूँ।

परंतु स्याद्वाद अर्थात् क्या? जिसे किसी से भी मतभेद नहीं है। सभी धर्मों को एक्सेप्ट करता है, सभी डिग्री को एक्सेप्ट करता है।

स्याद्वाद तो हर एक डिग्री का धर्म जानकर बोलता है। 360 डिग्री, 356 डिग्री, 340 डिग्री, 50 डिग्री - सभी का, व्यवहार-निश्चय सबकुछ जाने, वह स्याद्वाद होता है। फादर (पिता) भी हूँ और बेटा भी हूँ। तब स्याद्वाद क्या कहता है? यदि आप बेटे हो तो किस आधार पर फादर हो? तब वह कहता है कि ये मेरे बेटे के आधार पर मैं फादर हूँ और पिता के आधार पर मैं बेटा हूँ। वह सापेक्षता बताता है।

मैं आपको स्थूल में बात बता रहा हूँ कि देर आर थ्री हंड्रेड सिक्स्टी डिग्रीस। अब, इस 360 डिग्री में पूरा वर्ल्ड व्यू पोइन्टस में हैं। सभी अपनी-अपनी डिग्री पर हैं। और जब तक डिग्री पर हैं तब तक मतभेद है। जब सेन्टर में आ जाएँगे तब किसी भी डिग्री के साथ मतभेद नहीं रहेगा और सभी डिग्री वालों को समझ सकेगा।

प्रश्नकर्ता : यानी यहाँ पर किसी को गलत कहने की बात ही नहीं है।

दादाश्री : किसी को गलत कहने की ज़रूरत ही नहीं है न! ऐसा है न, 360 डिग्रियों में किस डिग्री को हम गलत कह सकते हैं? ऐसा यह जगत् 360 डिग्री वाला है। सेन्टर भी है। अब, सेन्टर वाले को सभी डिग्री वाले के साथ समान ही लगता है। परंतु 125 डिग्री वाले का 150 डिग्री वाले के साथ मतभेद होता है। यदि 125 डिग्री वाला सेन्टर में देखे और 150 डिग्री वाला सेन्टर में देखे तो उन दोनों के मतभेद होंगे ही अवश्य। होंगे या नहीं होंगे? और फिर वे तो आमने-सामने कहते हैं, तेरा गलत है। तब दूसरा कहता है, तेरा गलत है। तो उसे मैं कहता हूँ कि तू 150 डिग्री पर आ जा और इससे कहता हूँ कि तू 125 डिग्री पर जा। अत: दोनों के झगड़े खत्म हो जाते हैं।

अब यों तो मैं इसे वहाँ जाने के लिए-भेजने के लिए नहीं कहता हूँ। पर फिर मैं इसे अपनी तरह से समझाता हूँ कि भाई, 125 डिग्री पर ऐसा है और उसे समझाता हूँ कि 150 डिग्री पर ऐसा है। इसलिए फिर वे दोनों समझ जाते हैं। किस दृष्टि से क्या व्यू पोइन्ट है, इतना समझ में आना चाहिए। सभी रेडियस (त्रिज्या) मेरे लिए समान है। क्योंकि मैं सेन्टर में आ गया हूँ, इसलिए मेरे लिए सभी रेडीयस समान ही है न!

आपको लगता है न, वास्तविक है यह बात?

प्रश्नकर्ता : हाँ, हाँ। सही लगती है।

दादाश्री : वास्तविक, यह बात भ्रांति रहित है। भ्रांति वाली बातें सभी विरोधाभास वाली होती हैं। इसलिए हम कहते हैं न, हमारी वाणी के अलावा, तीर्थंकरों की वाणी के अलावा अन्य सभी वाणी विरोधाभास वाली हैं। फिर भी रिलेटिव में वे सभी बातें सही हैं। क्योंकि स्याद्वाद है! वीतरागों ने उसे स्याद्वाद कहा है, एक अंश (डिग्री) से लेकर 360 डिग्री तक की सभी बातें अपनी जगह पर करेक्ट हैं।

ज्ञानी की स्याद्वाद वाणी

प्रश्नकर्ता : आपकी वाणी, 'ज्ञानी' की वाणी कैसी कहलाती है?

दादाश्री : हमारी वाणी टेपरिकॉर्ड है और आपकी भी वाणी टेपरिकॉर्ड है। सिर्फ 'ज्ञानी' की वाणी स्याद्वाद होती है।

प्रश्नकर्ता : स्याद्वाद, वह चेतनवाणी कहलाती है?

दादाश्री : वाणी चेतन हो ही नहीं सकती; फिर वह हमारी हो या आपकी। हाँ, हमारी वाणी संपूर्ण शुद्ध चेतन को स्पर्श करके निकलती है, इसलिए चेतन जैसी भासित होती है।

स्याद्वाद वाणी, वह अनेकांत कहलाती है।

प्रश्नकर्ता : स्याद्वाद अर्थात् क्या?

दादाश्री : किसी भी धर्म का किंचित्मात्र प्रमाण न *दुभे,* वैसी वाणी। इस वाणी को वैष्णव, जैन, श्वेतांबर, दिगंबर, स्थानकवासी, पारसी, मुस्लिम, सभी 'एक्सेप्ट' करते हैं। यह एकांतिक नहीं है, अनेकांत है इसमें।

प्रश्नकर्ता : इसे निराग्रही कह सकते हैं?

दादाश्री : हाँ, कह सकते हैं। इसमें किसी भी प्रकार का आग्रह नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : निराग्रही वाणी के लिए आपको सोचकर बोलना पड़ता है या नहीं?

दादाश्री : नहीं। यदि सोचकर बोलें, तो वह निराग्रही वाणी होगी ही नहीं। यह तो 'डायरेक्ट' चेतन को स्पर्श करके निकलती है। 'ज्ञानी' की वाणी जागृति सहित होती है। वह सामने वाले के हित के लिए ही होती है। किसी का हित थोड़ा भी नहीं बिगड़े, उस अनुसार जागृति में रहता ही है।

ज्ञानी के अलावा स्याद्वाद वाणी कोई नहीं बोल सकता!

स्याद्वाद वाणी कब निकलती है?

प्रश्नकर्ता : स्याद्वाद् वाणी कब निकलती है?

दादाश्री : स्याद्वाद् वाणी कब उत्पन्न होती है? अहंकार की भूमिका पूरी हो जाए तब। पूरा जगत् निर्दोष दिखता है, कोई दोषित ही नहीं दिखता! चोर भी हमें दोषित नहीं दिखता।

अहंकार क्षय हो जाना चाहिए। बुद्धि क्षय हो जानी चाहिए, वह उपशम हुई नहीं चलेगी। सभी कर्मों का क्षय हो जाएगा; क्रोध-मान-माया-लोभ का क्षय हो जाएगा, ये सभी गुण क्षायक हो जाएँगे, तब स्याद्वाद वाणी निकलेगी। तब तक तो जोखिमदारी है। बहुत ही जोखिमदारी, अत्यंत जोखिमदारी! संपूर्ण वीतराग विज्ञान हाज़िर होना चाहिए। आत्मा का स्पष्ट अनुभव हो चुका हो, तभी ऐसी वाणी निकलती है। तब तक सभी बुद्धि की बातें, व्यवहार की बातें मानी जाती हैं। स्याद्वाद वाणी न निकले, तब तक मोक्षमार्ग में उपदेश देना, वह भयंकर जोखिमदारी है।

मोक्षमार्ग में उपदेश देने में जोखिमदारी

उपदेश कौन दे सकता है? सामने वाला कोई विवाद खड़ा न कर सके, वही। वर्ना अपने मार्ग में चर्चा होती ही नहीं। हमारी पुस्तक समझने का तरीका क्या है? दो लोग एक जैसा नहीं समझते। एक सच्ची समझ वाला और दूसरा अधूरी समझ वाला होता है, उसमें अधूरी समझ वाले ने ज़िद पकड़ी कि 'मेरा ही सच्चा है', तो उसे 'तेरा करेक्ट है' कहकर आगे निकल जाओ। सत् की समझ में विवाद नहीं होना चाहिए।

मेरा सच्चा है, ऐसा नहीं मानना चाहिए। 'मेरा है, इसलिए सच है' ऐसा अंदर होता रहे, वह रोग उत्पन्न हुआ कहलाता है। अपनी सच्ची

बात सामने वाला कबूल करेगा ही। यदि न करे तो हमें छोड़ देना चाहिए। मैं जो बोलता हूँ, वह सामने वाले का आत्मा कबूल करेगा ही। कबूल नहीं करता, वह उसकी *आड़ाई* (अहंकार का टेढ़ापन) है। क्योंकि यह वाणी मेरी नहीं है। इसलिए इसमें भूल नहीं होती। 'मेरी वाणी है', ऐसा जहाँ पर हो, वहाँ पर वाणी में भूल होती है।

अभी इस काल में उपदेश देने जाएँ तो बंधन हो, वैसा है। कषाय सहित प्ररूपणा, वह नर्क में जाने की निशानी है। बहुत हुआ तो मंदकषायी को चला सकते हैं। वर्ना यह तो बहुत ही भारी जोखिम है

संपूर्ण कषायभाव से मुक्त हो, तब सत्संग की धारा निकलती रहती है, तब एक-एक, दो-दो घंटे, लगातार सत्संग निकलता रहता है। कषाय वालों की वाणी रूक जाती है।

अकषायी वाणी का अर्थ क्या है? वाणी का मालिक 'खुद' नहीं है वह। वाणी का मालिक हो, वह तो क्या कहेगा कि 'मैंने कितनी अच्छी वाणी बोला! आपको पसंद आया न?' अर्थात् उसका चेक भुना लेता है। हम तो वाणी के मालिक नहीं हैं, मन के नहीं हैं और इस देह के भी मालिक नहीं हैं।

'ज्ञानी पुरुष' सभी दवाईयाँ बता देते हैं। रोग का निदान भी कर देते हैं और दवाई भी बता देते हैं। आपको सिर्फ पूछ लेना चाहिए कि सच्ची बात क्या है और मुझे तो ऐसा समझ में आया है इसलिए जब वे तुरंत बताते हैं तब वह 'बटन' दबाना है कि चलने लगता है!

धर्म की चर्चा में सामने वाले को समझाने के तरीके अलग-अलग हैं।

(1) वाणी से खुद का स्व-रक्षण, स्व-बचाव करे। वह एक प्रकार कहलाता है।

(2) सामने वाले को खुद 'कन्विन्स' (मनाना) करे - वह एक तरीका है। सामने वाला किसी भी धर्म का पालन करता हो, फिर भी वह सहमत हो जाए। ऐसा बोलना आना चाहिए न? इतनी शक्ति होनी चाहिए न? जितना ज्ञान समझ में आएगा उतनी शक्ति उत्पन्न होगी। और सामने वाले को 'कन्विन्स' करते समय थोड़े भी क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं होने चाहिए। वर्ना, फिर सामने वाला 'कन्विन्स' होगा ही नहीं। कषाय उत्पन्न होना, वह तो कमज़ोरी है।

(3) कुछ लोग कच्चे होते हैं तो खुद सामने वाले को समझाने जाते हैं, परंतु सामने वाले के प्रभाव से खुद ही बदल जाते हैं! सामने वाला ऐसा-ऐसा पूछता है कि खुद उलझ जाता है और मन में ऐसे पलट जाता है कि मुझे तो कोई ज्ञान ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : आनंदघनजी महाराज ने ही कहा है न, कि 'भाई, तू उपदेश मत देना। उसमें भी खास ध्यान रखना कि कोई गलत उपदेश देगा तो, नर्क के अलावा अन्य कुछ तेरे लिए नहीं है'।

दादाश्री : नहीं तो भी कषाय सहित प्ररूपणा, वह नर्क में जाने की टिकट ही है। देखो, नर्क में जाने की टिकट लेकर आए हैं न! देखो आश्चर्य! देवगति तो कहाँ गई, परंतु नर्क में जाने की टिकट हो गई।

'ज्ञानी' की समझ से मिलाओ आपकी समझ

'ज्ञानी पुरुष' की समझ से (आपकी) समझ मिलानी है, 'पैरेलल टु पैरेलल।' वर्ना 'रेल्वे लाइन' उड़ जाएगी। 'खुद की' समझ तो

डालनी ही नहीं है। अंदर समझ है ही नहीं न! रत्तीभर भी समझ नहीं है। खुद की समझ तो इसमें चलानी ही नहीं है। खुद में समझ है ही नहीं न! कुछ भी समझ नहीं है। यदि समझ होती न, तो भगवान हो जाता!

प्रश्नकर्ता : लोग प्रश्न पूछें और उनका खुलासा दें तो उसमें हर्ज क्या है?

दादाश्री : प्रश्नों के खुलासे वह अलग चीज़ है। अभी तो जागृति आनी चाहिए, अभी जागृति परिणामित होनी चाहिए। परिणामित होने के बाद, बहुत समय बाद में फिर दिए गए खुलासे काम के हैं। वर्ना खुलासे तो, दो-खुलासे दिए और अपना ज्ञान 'डाउन' हो जाएगा, बुद्धिगम्य हो जाएगा।

प्रश्नों के जवाब देने से पहले तो पूरा 'इगोइज़म' (अहंकार) उतर जाना चाहिए। पूरा यानी नाटकीय 'इगोइज़म' भी उतर जाना चाहिए। अभी तो ये सारे 'फंक्शन' कच्चे हैं। ये 'फंक्शन' पूरे हुए बिना स्याद्वाद वाणी नहीं निकल सकती। इसके बजाय तो बोलना ही नहीं चाहिए। क्योंकि दोष लगता है। वह तो, जैसे-जैसे ये सारे पासे दबते जाएँगे, बुद्धि दबती जाएगी, 'इगोइज़म' खत्म होता जाएगा, वैसे-वैसे स्याद्वाद वाणी निकलेगी। अभी प्रश्नों की बाबत में नहीं पड़ना है, वर्ना कच्चा कट जाएगा। फिर वापस पक्का करना होगा तो नहीं हो पाएगा। क्योंकि एक बार केस उलझ गया इसलिए!

यानी अंदर 'इगोइज़म' का रस नहीं पड़ना चाहिए, बुद्धि का रस नहीं पड़ना चाहिए। उसमें फिर बुद्धि का अभाव हो जाना चाहिए, 'इगोइज़म' का अभाव हो जाना चाहिए। और उसका भी अभ्यास होना चाहिए तब काम का! तब तक धीरज रखना अच्छा!

वाणी के नियमों के पालन से, होगी स्याद्वाद वाणी

प्रश्नकर्ता : हमारी वाणी स्याद्वाद कैसे हो सकती है?

दादाश्री : वाणी के कई नियमों का पालन करोगे तब वाणी स्याद्वाद होगी। कई तरह से वाणी को निर्मल रखते हैं, तब वह वाणी वचनबल वाली होती है। वचन का कितने ही प्रकार से जतन किया हो तब वचनबल होता है।

प्रश्नकर्ता : 'ज्ञान' होने के बाद वचनबल आता है न?

दादाश्री : नहीं। 'ज्ञान' नहीं हुआ हो तब भी वचनबल होता है। जिसने वाणी के सारे नियमों का पालन किया हो, उसे भी वचनबल होता है। भले ही वह अज्ञानदशा में हो।

प्रश्नकर्ता : वह वचनबल तो व्यवहारिक है न? व्यवहार में वह काम आता है न?

दादाश्री : हाँ, बहुत काम आता है। वचनबल यानी तो बात ही कुछ और होती है। उसके जैसा कोई बल नहीं है। उससे तो सारे युद्ध जीते जा सकते हैं। हथियारों से युद्ध नहीं जीते जा सकते।

प्रश्नकर्ता : *पोतापणुं* (मेरापन) जाएगा, तो वचनबल आता है?

दादाश्री : *पोतापणुं* जाएगा, तब तो भगवान ही हो गया। लेकिन यह तो *पोतापणुं* नहीं जाता। उससे पहले वचनबल आता है। वचन शुद्ध होने के बाद वाणी मीठी होती है, फिर वचनबल उत्पन्न होता है।

जिनकी वाणी से किसी को भी किंचित्मात्र दु:ख न हो, जिनके वर्तन से किसी को भी किंचित्मात्र दु:ख न हो, जिनके मन में खराब

भाव नहीं होते, वे शीलवान हैं। शीलवान हुए बिना वचनबल उत्पन्न नहीं होता।

स्याद्वाद वाणी वह है गज़ब का वचनबल

इन 'दादा' के जैसा वचनबल होना चाहिए। उठो कहे, तो उठ जाए। 'हमारा' वचनबल तो गजब का है! 'हमारे' शब्द कैसे होते हैं? शास्त्रों के शब्द नहीं होते। 'हमारे' प्रत्यक्ष चेतन शब्द से तो भीतर 'ज्ञान' हाज़िर हो ही जाता है! आत्मा ही प्रकट हो जाता है! और फिर ज़रा सी भी चोट नहीं लगती। 'हमारी' वाणी से बिल्कुल भी अजीर्ण नहीं होता है। 'यह' तो पूरा 'ज्ञानार्क' है! यह पच जाता है और अजीर्ण नहीं होता! 'ज्ञानी पुरुष' का एक भी वचन व्यर्थ नहीं जाता! ग़ज़ब का, ज़बरदस्त वचनबल होता है! उनके एक-एक वचन पर जगत् आफरीन होगा! उनका एक ही वचन अंत में मोक्ष तक ले जाएगा। 'हमारे' एक-एक शब्द में चेतन हैं। वाणी रिकॉर्ड स्वरूप है, जड़ है, लेकिन हमारी वाणी, भीतर ग़ज़ब के प्रकट हो चुके परमात्मा को स्पर्श करके निकलती है, इसलिए निश्चेतन को चेतन बना दे, ऐसी चेतनवाणी है! सामने वाले की भावना होनी चाहिए। हम बोलें कि, 'अरे, कूद', तो सामने वाला दस फुट का गड्ढा भी कूद जाता है! तब कुछ लोग कहते हैं कि, 'आप शक्तिपात करते हैं।' नहीं, हमारे वचन में ही ऐसा बल है! कोई बहुत डिप्रेस हो चुका हो तो हम उसे आँखों से प्रेम का पान करवाते हैं। 'ज्ञानी पुरुष' तो किसी भी तरह से शक्ति प्रकट करवा दें। ग़ज़ब का वचनबल होता है।

कवि क्या गाते हैं :

'जगत् उदय अवतार, देशना ते श्रुतज्ञान,
स्याद्वाद ज्ञान-दान, सर्वमान्य परमाण।'

जगत् का उदय अच्छा हो, तब 'ज्ञानी पुरुष' प्रकट हो जाते हैं और उनकी 'देशना' ही 'श्रुतज्ञान' है। उनके एक ही वाक्य में सभी शास्त्र पूर्ण रूप से आ जाते हैं!

हमारे इस एक-एक शब्द में अनंत-अनंत शास्त्र समाए हुए हैं! इसे समझे और सीधा चले तो काम ही निकाल देगा! एकावतारी हो सकें, ऐसा यह विज्ञान है! लाखों जन्म कम हो जाएँगे! इस विज्ञान से तो राग भी उड़ जाएँगे और द्वेष भी उड़ जाएँगे और वीतराग होते जाएँगे। खुद अगुरु-लघु स्वभाव वाला हो जाएगा। इसलिए इस विज्ञान का जितना लाभ उठाया जाए, उतना कम है।

और मैं जो बोलता हूँ, वह तो ज्ञान है। लेकिन जिसकी बुद्धि थोड़ी सम्यक् हुई हो, सम्यक् यानी अच्छी सुगंधी वाली, तो उसे तुरंत हमारा ज्ञान समझ में आ जाए, ऐसा है। ज्ञान बुद्धि से समझ में आ सकता है, लेकिन बुद्धि से बोल नहीं सकते। बुद्धि से यह विज्ञान बोल नहीं सकते। विज्ञान यानी चैतन्य ज्ञान समान, अपने आप ही काम करता रहता है।

ज्ञानी की वाणी सुनने से प्रकटे सिद्धांत

अरबों रुपये देने से नहीं मिलता, इनमें से एक भी अक्षर सुनने को नहीं मिलता। यह बुलबुला (ज्ञानी) जीवित हैं तब तक काम निकाल लो, फिर एक अक्षर भी सुनने को नहीं मिलेगा। इन सभी को तो जब पचेगा तब की बात है न! बाकी, पचना आसान नहीं है। खुद को फायदा हो जाएगा, सिद्धांत हाथ में आ जाएगा। पर पचने के बाद उगेगा। वह तो बात ही अलग है न! थोड़ा-बहुत उगेगा लेकिन वह ऐसा नहीं उगेगा न! ऐसा अद्भुत नहीं उगेगा! यानी थोड़ा बहुत उगेगा, हमारे आशीर्वाद हैं। हम आशीर्वाद भी देते हैं।

ज्ञानी की वाणी सुनते रहने से प्रकट होती है। इन ज्ञानी के पास से सीधी वाणी, डायरेक्ट सुनने से उसका अंदर पाचन होता है और तब प्रकट होती है। प्रकट होकर खुद ही स्वाभाविक रूप से अंकुरित होती है। यदि उसमें से समझदारीपूर्वक देखता रहे तो। बाकी, उसे देखने की ही ज़रूरत है।

यह पूरी केवलज्ञानमयी वाणी है। केवलज्ञान किसे कहते हैं? जहाँ बुद्धि का एन्ड हो जाता है, जहाँ मतिज्ञान का एन्ड हो जाता है। जहाँ मतिज्ञान का एन्ड हो जाता है वहाँ केवलज्ञान है। यह प्रकाश केवलज्ञान से ही उत्पन्न हुआ प्रकाश है!

'ज्ञानी पुरुष' की वाणी उल्लासपूर्वक सुनते रहें, उससे वैसी वाणी होती जाती है। सिर्फ नकल करने से कुछ फायदा नहीं होता।

यानी यह दुनिया का एक आश्चर्य है! बात सुननी हो उतनी सुनना, ठीक लगे तो धारण करना, ठीक न लगे तो वापस रख देना, वहीं के वहीं।

जितने शब्द मैं बोल रहा हूँ, वे सभी प्रूफ देने के राइट (अधिकार) से बोल रहा हूँ। एक भी शब्द मैं बिना प्रूफ के नहीं बोल सकता। इनमें से एक भी शब्द गप नहीं है।

तीर्थंकरों का श्रुतज्ञान, निकला ज्ञानी के मुख से

प्रश्नकर्ता : अब, यह जो ज्ञानी पुरुष की वाणी सुनते हैं, उसे क्या कहेंगे?

दादाश्री : उनकी तो बात ही अलग है न! वह तो, यह भी श्रुतज्ञान से बाहर कुछ भी नया नहीं है। अध्यात्म की बाल पोथी पढ़ने को भी श्रुतज्ञान माना जाता है, ज्ञानी पुरुष की वाणी को भी श्रुतज्ञान माना जाता है, ये दोनों ही। यह पक्के लोगों की बात है, वर्ना इसकी भी दुकानें खोल देते कि अब स्टैन्डर्ड नाइन्थ यानी यह सुश्रुत।

हमारी बात आत्मा में से निकली है और आत्मा को ही पहुँचती है इसलिए समझ में आ ही जाती है। हमारा एक-एक वाक्य वह श्रुतज्ञान है। मेरे लिए स्याद्वाद है, शुद्ध आत्मा का शुद्ध ज्ञान है, निराग्रही है और आपके लिए श्रुतज्ञान है।

अगर इसे सुनने में खो जाए न, तो कितने ही पाप भस्मीभूत हो जाएँगे! यह पूरा चौबीस तीर्थंकर भगवानों का गुह्य श्रुतज्ञान सुन रहे हो। गुह्य श्रुतज्ञान!

ज्ञानी का शुद्ध उपयोग, बोलते समय

हम यह जो बोल रहे हैं, वह उपयोगपूर्वक है। यह रिकॉर्ड बोलती है, तब उस पर हमारा उपयोग रहता है। क्या-क्या भूल हैं और क्या नहीं? इस स्याद्वाद में क्या भूल हुई उसे हम देखते रहते हैं बारीकी से और ये जो बोल रहे हैं, वह रिकॉर्ड है। लोगों की भी रिकॉर्ड ही बोलती है, लेकिन वे मन में ऐसा मानते हैं कि, 'मैं बोला'। हम निरंतर शुद्धात्मा के उपयोग में रहते हैं, आपसे बात करते-करते भी।

प्रश्नकर्ता : दो *लक्ष* रहते हैं?

दादाश्री : नहीं, दो *लक्ष* नहीं रहते। *लक्ष* एक ही रहता है। बातें करते हैं, उसमें मुझे कुछ नहीं करना होता। हम तो यही देखते रहते हैं कि बातों में क्या हो रहा है। हम एक घड़ी भी, एक मिनट भी उपयोग से बाहर नहीं रहते। आत्मा का उपयोग रहता ही है।

ज्ञानी की केवलज्ञान सहित वाणी

ज्ञानी पुरुष के एक ही वाक्य के अनुसार पूरी ज़िंदगी बीतेगी न, तो कल्याण कर देगा। यदि

एक ही वाक्य ज्ञानी का कभी उतर जाए तो पूरी ज़िंदगी कल्याण कर देगा। ज्ञानी पुरुष कभी भी नहीं होते और होते हैं तो बुद्धि वाले ज्ञानी होते हैं। बुद्धि वाले ज्ञानी नहीं चलेंगे। बुद्धि वाले प्रतिस्पर्धा वाले होते हैं। एक से बढ़कर एक होते हैं। बुद्धि रहित ज्ञानी होते हैं, वे पूर्ण होते हैं। हम में बुद्धि नहीं होती, बिल्कुल भी नहीं।

केवलज्ञान सहित यह वाणी है। इसलिए यह लोगों के लिए बहुत लाभदायक होती हैं। कषाय मंद हो जाते हैं। केवलज्ञान में सिर्फ चार अंश की कमी वाली वाणी है, लेकिन उसका हर्ज नहीं है। चार अंश की कमी तो चल सकती है।

हमारे ये शब्द आपके भीतर उतर गए तो वे काम करेंगे। इसलिए तो हम निरंतर बोलते रहते हैं। क्योंकि अव्यक्त रहेंगे तो अंत में तो वे लकड़ी में जला देंगे। क्योंकि वे शब्द भी जलने जैसी चीज़ हैं।

प्रश्नकर्ता : जलने जैसी चीज़ है?

दादाश्री : हाँ न! लकड़ी जैसी ही, शब्दों में और लकड़ी में फर्क नहीं है। वे भी जल जाते हैं, शब्द भी जल जाते हैं। क्योंकि टेपरिकार्ड हैं।

ज्ञानी की स्याद्वाद वाणी का रहस्य

प्रश्नकर्ता : आपकी निखालस वाणी और निखालस हास्य, उनका रहस्य क्या है?

दादाश्री : भगवान मुझे वश हो गए हैं। पूरे चौदह लोक के नाथ, जिन्हें पूरा जगत् मान रहा है, वे भगवान मुझे वश हो चुके हैं।

हम स्वतंत्र सुख भुगत रहे हैं। आपका *ऊपरी* (मालिक) ही मैंने कोई देखा नहीं। हमारा *ऊपरी* वर्ल्ड (जगत्) में कोई नहीं है और जो भगवान हैं, वे तो हमें वश हो चुके हैं। किसलिए वश हो चुके हैं? हमारी गरज़ से या उनकी गरज़ से? उनकी गरज़ से हमें वश होते हैं। मैं तो 'वे *ऊपरी* हैं, वे अच्छे हैं', ऐसा कहता हूँ। पर वे अब कहाँ जाएँगे? उन्हें जो कार्य करना है, वह कार्य कैसे होगा?

प्रश्नकर्ता : उन्हें क्या कार्य करना है, दादा?

दादाश्री : इस जगत् के लोगों का जो कल्याण होने वाला है, उनका जो कार्य करना है, तो उसके लिए वाणी कौन बोलेगा? ज्ञान कौन देगा? उनमें वाणी नहीं हैं। यह टेपरिकार्ड बोलती रहती है। वाणी कैसी चाहिए? मालिकी रहित वाणी हो तभी मोक्ष होगा।

भीतर जो दादा भगवान बैठे हैं, वे हमारे भी भगवान हैं। लेकिन वे *ऊपरीपना* के लिए मना कर रहे हैं, 'आप हमारे *ऊपरी*'। मैंने कहा, 'ऐसा क्यों'? तब कहते हैं, कि 'आपने हमें बहुत दिनों तक *ऊपरी* के रूप में भजा है। इसलिए अब हमें आपको *ऊपरी* के रूप में रखना है कि आप इन लोगों का कल्याण करो'। मैंने कहा, 'आप कल्याण करो न'! तब कहते हैं, 'हमसे कल्याण कैसे होगा? हमारी तो वाणी नहीं है, कुछ भी नहीं है'। इसलिए भगवान ने खुद कहा है कि, 'हम ज्ञानी के वश हैं'! भक्त कहते हैं कि, 'भगवान हमें वश हुए हैं' तब भगवान उनसे कहते हैं, 'नहीं, हम तो ज्ञानी के वश हो चुके हैं।' भक्त तो बावले कहे जाते हैं। सब्ज़ी खरीदने निकलते हैं और कहीं तालियाँ बजाने बैठ जाते हैं। फिर भी भक्त में एक गुण है कि बस, 'भगवान, भगवान' एक ही भाव। वह भाव एक दिन सत्य भाव को प्राप्त करता है, तब 'ज्ञानी पुरुष' मिल जाते हैं, तब तक 'तू ही, तू ही' गाते रहते हैं और जब 'ज्ञानी पुरुष' मिल जाते हैं तब 'मैं ही, मैं ही' सब जगह गाते हैं! जब तक 'तू' और

'मैं' अलग हैं, तब तक माया है और 'तू'-'मैं' खत्म हो गया, 'तेरा-मेरा' खत्म हो गया यानी अभेद हो गए!

भगवान तो कहते हैं कि, 'तू' भी भगवान हैं। तेरा भगवान पद संभाल, लेकिन यदि तू नहीं संभालेगा तो क्या होगा? पाँच करोड़ की एस्टेट वाला लड़का हो, पर होटेल में कप-रकाबी धोने जाए और एस्टेट न संभाले, उसमें कोई क्या कर सकता है? मनुष्य पूर्ण रूप हो सकता है, सिर्फ मनुष्य ही, अन्य कोई नहीं, देव लोग भी नहीं!

श्रीमद् राजचंद्र ने क्या कहा है? जिन्हें भगवान वश हो गए हैं, ऐसे ज्ञानी पुरुष में कौन-कौन से गुण नहीं होते? गर्व, गारवता, अंतरंग स्पृहा नहीं होती, उन्मत्तता नहीं होती।

प्रश्नकर्ता : वे भी सूक्ष्म रूप में पड़े रहते हैं। फिर वे बहुत ऊँचाई पर जाने के बाद वे जाते हैं, तब तक नहीं जाते।

दादाश्री : परंतु उनके जाने के बाद ही ज्ञानी कहलाते हैं। उनके जाने के बाद ही हम कहते हैं कि यह टेपरिकार्ड बोल रही है।

ज्ञानी की वाणी वह है प्रत्यक्ष सरस्वती

यह अंबालाल मूलजीभाई, देहधारी है, फिर भीतर परमात्मा संपूर्ण प्रकट हो गए हैं, फिर भी उनकी वाणी भी रिकॉर्ड स्वरूप है। हमें बोलने की सत्ता ही नहीं है। हम तो रिकॉर्ड कैसा बजता है, उसे देखते हैं और जानते हैं। वाणी पूर्णतया जड़ है। पर हमारी वाणी चेतन को, प्रकट परमात्मा को स्पर्श करके निकलती है, इसलिए उसमें चेतन भाव है, प्रत्यक्ष सरस्वती है। यह फोटो वाली सरस्वती तो परोक्ष सरस्वती है। हमारी वाणी तो प्रत्यक्ष सरस्वती है। इसलिए सामने वाले के अनंत जन्मों के पापों को जला कर भस्मीभूत करती है। प्रत्यक्ष सरस्वती के दर्शन करने हों तो यहाँ हमारी वाणी सुने, तब हो जाते हैं!

'ज्ञानी पुरुष' जब स्याद्वाद वाणी बोलते हैं, उस समय उनमें अहंकार नहीं होता। 'ज्ञानी पुरुष' की वाणी मीठी-मधुर, किसी को आघात नहीं पहुँचे, प्रत्याघात नहीं पहुँचे, ऐसी होती है। किसी को भी किंचित्मात्र दु:ख न हो, ऐसी वाणी निकले तब वह सब चारित्र ही है। बाकी दूसरी किसी चीज़ पर से चारित्रबल पहचाना नहीं जा सकता। यदि बुद्धि स्याद्वाद हो तो स्याद्वाद जैसे लक्षण लगते हैं, परंतु वह संपूर्ण नहीं होता। जब ज्ञान स्याद्वाद होता है, तब उसका चारित्र तो वीतराग चारित्र होता है। ज्ञान स्याद्वाद को हर एक धर्म के लोग प्रमाण के तौर पर स्वीकार करते हैं। उस वाणी में खेंच (आग्रह) ज़रा भी नहीं होता।

वाणी का किसी भी तरह से अपव्यय न हो और वाणी को उसके विभाविक स्वरूप में न ले जाएँ, वह सरस्वती की आराधना है।

यह तो विज्ञान है। जब वाणी सरस्वती स्वरूप हो जाए तब लोगों के हृदय को स्पर्श करती है, तभी तो लोगों का कल्याण होता है। वर्ल्ड में हृदयस्पर्शी वाणी मिलना मुश्किल होता है। हमारी वाणी हृदयस्पर्शी होती है। उसका एक शब्द ही यदि आपमें सीधा उतर जाए तो वह आपको अंत में मोक्ष तक ले जाएगा।

स्याद्वाद वाणी से वीतराग पहचाने जाते हैं

हमारी वाणी संपूर्ण वीतराग होती है, स्याद्वाद होती है। वीतराग को पहचानने का सादा तरीका उनकी वाणी है। जितना आपका जौहरीपन होगा, उतनी इसकी कीमत होगी। लेकिन इस काल में जौहरीपन ही कहीं रहा नहीं है। अरे, पाँच अरब के हीरे की कीमत पाँच रुपये लगाते

हैं, तब हीरे को खुद बोलना पड़ता है, कि मेरी कीमत पाँच अरब की है। वैसे ही आज हमें खुद बोलने की नौबत आई है कि हम भगवान हैं! अरे! भगवान के *ऊपरी* हैं! संपूर्ण वीतराग! भगवान ने हमें *ऊपरी* का पद खुद दिया है। उन्होंने कहा कि, 'हम पात्र खोज रहे थे, जो हमें आप में दिखाई दिया। हम तो अब संपूर्ण वीतराग होकर मोक्ष में बैठे हैं। अब, हम से किसी का कुछ सिद्ध नहीं हो सकता। इसलिए आप प्रकट स्वरूप में सर्व शक्तिमान हैं। देहधारी होते हुए भी संपूर्ण वीतराग हो। इसलिए हम आपको हमारा भी *उपरीपन* दे देते हैं!

आज हम चौदह लोक के नाथ के *ऊपरी* हैं। सर्व सिद्धि सहित यह ज्ञानावतार प्रकट हुआ है! अरे! तेरा दीया सुलगाकर (अपनी ज्योति जलाकर) चलता बन। बहुत नाप-तौल मत करना।

ज्ञानी पुरुष चाहे सो करें, क्योंकि मोक्षदान का लाइसेन्स उनके हाथों में होता है! अरे, ज्ञानी कितने होते हैं संसार में? पाँच या दस? अरे! कभी कभार ही ज्ञानी जन्म लेते हैं। और उसमें भी अक्रम मार्ग के ज्ञानी तो दस लाख वर्षों में जन्म लेते हैं और वह भी ऐसे वर्तमान आश्चर्य युग जैसे कलियुग में ही! लिफ्ट में ही ऊपर चढ़ाते हैं। सीढ़ियाँ चढ़कर हाँफना नहीं पड़ता। अरे! बिजली की चमक में मोती पिरो ले! यह बिजली की चमक हुई है, तब अपना मोती पिरो ले। लेकिन भाई तब धागा खोजने निकलता है! क्या हो सकता है? पुण्य कच्चा पड़ जाता है।

शासन तो भगवान महावीर का ही

मात्र वीतराग वाणी ही मोक्ष में ले जाने वाली है। हमारी वाणी मीठी, मधुरी होती है, अपूर्व होती है। पहले कभी सुनी न हो वैसी होती है, डिरेक्ट (प्रत्यक्ष) वाणी होती है। शास्त्र में जो वाणी होती है वह इन्डिरेक्ट (परोक्ष) वाणी होती है। डिरेक्ट वाणी यदि एक ही घंटा सुनें, तो समकित हो जाए। हमारी वाणी स्याद्वाद होती है। किसी का भी प्रमाण नहीं दुभे, उसका नाम स्याद्वाद। सर्व नय सम्मत होती है। सभी व्यू पोइन्ट को मान्य करती है। क्योंकि हम खुद सेन्टर में होते हैं। हमारी वाणी निष्पक्षपाती होती है। हिन्दु, मुस्लिम, पारसी, खोजा सभी हमारी वाणी सुनते हैं और उन्हें हम आप्त पुरुष लगते हैं, क्योंकि हम में भेदबुद्धि नहीं होती। सभी के अंदर मैं ही बैठा होता हूँ न! बोलने वाला भी मैं और सुनने वाला भी मैं ही।

किसी का प्रमाण न दुभे। इस वर्ल्ड का कोई ऐसा प्रमाण नहीं है, इन 360 डिग्री में, एक भी प्रमाण ऐसा नहीं है कि जो दुभे ऐसी हमारी वाणी होती है। किसी भी धर्म का, किसी भी व्यक्ति के अभिप्राय, प्रमाण न दुभे ऐसी हमारी विचारणा होती है। उसे स्याद्वाद कहते हैं और यह वीतरागों की चीज़ है!

हमारे पास यह तीर्थंकरों का माल है, हमारा खुद का माल नहीं है। लोग कहते हैं कि 'अब तो आपका, दादा भगवान का चलेगा न?' मैंने कहा, 'नहीं भाई, यह शासन तो भगवान महावीर का ही चलता रहेगा।' हम तो इसमें, इस काल में सोने के कलश के रूप में काम कर रहे हैं। लोगों को बहुत शांति हो जाती है न!

संपूर्ण रूप से सामने वाले का आत्म कल्याण कैसे हो, ऐसे भाव वाली वाणी, वही वीतराग वाणी! और वही उसका कल्याण करती है, अंत में मोक्ष ले जाती है। और वीतराग वाणी के अलावा कोई पार नहीं उतरा। वीतराग वाणी ही एक मात्र उपाय है, अन्य कोई उपाय नहीं है।

जय सच्चिदानंद

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में अडालज में सत्संग कार्यक्रम

16 मार्च (शनि) शाम 5 से 7 – **सत्संग** और **17 मार्च** (रवि) शाम 4 से 7-30 – **ज्ञानविधि**
19 मार्च (मंगल) – **पूज्य नीरुमाँ की 18वी पुण्यतिथि पर विशेष कार्यक्रम**

हिन्दी सत्संग शिविर - वर्ष 2024

5 से 9 जून - सत्संग और 8 जून - ज्ञानविधि

सूचना : यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। शिविर रजिस्ट्रेशन संबंधित जानकारी **Akonnect** ऐप के द्वारा दी जाएगी। जो महात्मा-मुमुक्षु इस शिविर में आना चाहते हैं, वे ट्रेन रिज़र्वेशन अवश्य करवा लें।

Pujya Deepakbhai's UK Satsang Schedule - 2024

Date	Day	From	to	Event	Venue
04-Apr-24	Thu	7:30 PM	10:00 PM	Pujyashree Satasang	Harrow Leisure Centre, Byron Hall, Christchurch Avenue, **Harrow**, HA3 5BD.
05-Apr-24	Fri	7:30 PM	10:00 PM	Pujyashree Satasang	
06-Apr-24	Sat	10:30 AM	12:30 PM	Aptaputra Satasang	
06-Apr-24	Sat	4:30 PM	7:30 PM	**GNAN VIDHI**	
07-Apr-24	Sun	10:30 AM	12:30 PM	Pujyashree Satasang	
08-Apr-24	Mon	7:30 PM	10:00 PM	Pujyashree Satasang	Shree Prajapati Community Centre, 21, Ulverscroft Road, **Leicester**, LE4 6BY.
09-Apr-24	Tue	7:00 PM	10:00 PM	**GNAN VIDHI**	

आत्मज्ञानी पूज्य नीरूमाँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

पश्चिम बंगाल - उड़ीसा

कोलकाता	**दिनांक : 22-26 और 29 मार्च**	**संपर्क : 9830080820**
मालदा टाउन	**दिनांक : 27 मार्च**	**संपर्क : 8967826883**
बानीपुर (जांगीपुर)	**दिनांक : 28 मार्च**	**संपर्क : 9434532172**
कांदी (मुर्शिदाबाद)	**दिनांक : 28 मार्च**	**संपर्क : 9474076718**
भुवनेश्वर	**दिनांक : 30-31 मार्च और 1 अप्रैल**	**संपर्क : 7077902158**
कटक	**दिनांक : 2-3 अप्रैल**	**संपर्क : 8763090042**

समय और स्थल की जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करे।

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **मुंबई :** 9323528901, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9924341188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा :** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687. **अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद (दादा दर्शन) :** 9574001445, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली :** 9810098564, **बैंगलूर :** 9590979099, **कोलकता :** 9830080820 **यु.एस.ए.-केनेडा:** +1 877-505-3232, **यु.के.:** +44 330-111-3232, **ऑस्ट्रेलिया:** +61 402179706

अहमदाबाद : सत्संग-ज्ञानविधि-इन्फोर्मल-फूडमेला : ता. 13 से 18 दिसम्बर 2023

अडालज : पारायण तथा मूर्तिओं की प्राणप्रतिष्ठा : ता. 23 से 31 दिसम्बर 2023

फरवरी 2024
वर्ष-19 अंक-4
अखंड क्रमांक - 220

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Licensed to Post Without Pre-payment
No. PMG/NG/036/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

आत्मकल्याणकारी वीतरागी स्याद्वाद वाणी

मात्र वीतराग वाणी ही मोक्ष में ले जाने वाली है। हमारी वाणी मीठी, मधुरी होती है। पहले कभी सुनी न हो वैसी अपूर्व होती है, डिरेक्ट (प्रत्यक्ष) वाणी होती है। डिरेक्ट वाणी यदि एक ही घंटा सुनें, तो समकित हो जाए। हमारी वाणी स्याद्वाद होती है। किसी का भी प्रमाण नहीं दुभे, उसका नाम स्याद्वाद। सभी व्यू पोइन्ट को मान्य करती है। क्योंकि हम खुद सेन्टर में होते हैं। हमारी वाणी निष्पक्षपाती होती है। हिन्दु, मुस्लिम, पारसी, खोजा सभी हमारी वाणी सुनते हैं और उन्हें हम आप्त पुरुष लगते हैं। क्योंकि हम में भेदबुद्धि नहीं होती। सभी के अंदर मैं ही बैठा होता हूँ न! बोलने वाला भी मैं और सुनने वाला भी मैं ही। संपूर्ण रूप से सामने वाले का आत्मकल्याण कैसे हो, ऐसे भाव वाली वाणी, वही वीतराग वाणी! और वही उसका कल्याण करती है, अंत में मोक्ष ले जाती है!

– दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner.
Printed at Amba Multiprint, Opp. H B Kapadiya New High School, Chhatral - Pratappura Road,
At - Chhatral, Tal : Kalol, Dist. Gandhinagar – 382729.